हँसती दुनिया

₹10/-

वर्ष 41• अंक 12 दिसम्बर 2014

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 41
अंक 12

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

दिसम्बर
2014

स्तम्भ

सबसे पहले	4
वर्ग पहेली	10
जन्म दिन मुबारक	12
समाचार	17
कभी न भूलो	28
भैया से पूछो	32
क्या आप जानते हैं	45
पढ़ो और हँसो	46
रंग भरो परिणाम	48
आपके पत्र मिले	65

चित्रकथा

दादा जी	13
फोटो फीचर	56–58

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

अपवित्र अन्न	पृथ्वीराज 6
मीत्रता का महत्व	दिनेश दर्पण 23
बैल खरीदने गया, बैल लेकर आया	राधेलाल 'नवचक्र' 29
बौनों का न्याय	साबिर हुसैन 37
सवाल ईज्जत का	ईलू रानी 43
इतने प्यार से ...	कमल जैन 51
मन का मैल	राधे लाल 'नवचक्र' 54
उपवासवाला व्रत	बदीप्रसाद वर्मा 59

कविताएं

मन के अच्छे होते हैं बच्चे	नरेश कुमार 5
दो बालगीत	दिनेश 'दर्पण' 11
सर्दी के दिन	गफूर 'स्नेही' 19
पुस्तक	डॉ. दिनेश चमोला 27
ये सब हमें सिखाओ	डॉ. परशुराम शुक्ल 34
प्यारे तोते	कमल सिंह चौहान 42
जाड़े की सुबह पढ़ाई	सत्यनारायण 53

विशेष/लेख

जंगल का राजा शेर	चाँद मोहम्मद घोसी 20
सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी	विकास अरोड़ा 26
ब्लैक आयरन वुड	विभा वर्मा 31
मेहनती चींटिया	कमल सौगानी 41
रोचक बातें हड्डियों की	प्रियंका आंचल 63
क्या है मौत की घाटी	किरण बाला 64

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एल. गुलाटी, सम्पादक विमलेश आहूजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

आओ–भागें रूकने के लिए

बच्चा जब पैदा होता है उसी समय से उसकी सांस चलना आरम्भ कर देती है, धीरे–धीरे बच्चा बड़ा होता है और वह कब भागना शुरू करता है, पता ही नहीं चलता। सबसे पहले स्कूल में एडमिशन की भाग–दौड़, उसके बाद पढ़ने के लिए; होम–वर्क की भाग–दौड़ और इस प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रथम आने की भाग–दौड़। जीवन का आरम्भ जो सहज होना चाहिए था वह आज केवल भाग–दौड़ की कार्यशैली का ही एक अंग बनकर रह गया है।

समय के साथ–साथ नौकरी के लिए, विवाह के पश्चात् घर–बाहर की जिम्मेदारियों के लिए; समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान पाने के लिए और अपने आप को दूसरों से ऊँचा दिखाने के लिए इन्सान की भाग–दौड़ बढ़ती ही चली जाती है। इस ऊहा–पोह में हमें ऐसा लगने लगता है कि समय भी बड़ी तेजी से भाग रहा है। यहाँ सोचने का विषय यह है कि क्या सचमुच ही हम भागे जा रहे हैं और अगर हम भाग रहे हैं तो हमारे भागने का लक्ष्य क्या है? थोड़ा रूकें और देखें, मेरे भागने में कहीं मेरा लक्ष्य तो नहीं खो गया। किसी वस्तु, गुण, पदार्थ या अपदार्थ को पाने के लिए जो भी मैंने कार्यशैली अपनाई थी उसे करने में मुझे खुद से ही कहीं शर्मिन्दा तो नहीं होना पड़ रहा और इससे कहीं मेरे स्वाभिमान का हनन तो नहीं हो रहा।

अक्सर लोग अपने हित के लिए दूसरों को नुकसान पहुँचाने से भी संकोच नहीं करते। हमें इस तरह व्यर्थ की भाग–दौड़ से बचना है। हर वर्ष की तरह सन् 2014 भी भागते–भागते अपनी चरम सीमा तक पहुँच रहा है और यही संदेश देकर जा रहा है, आओ अगर हमें भागना ही है तो अपने परमात्म स्वरुप के पीछे भागें, जहाँ भागना ही समाप्त हो जाता है व जैसे ही हम रूकते हैं तभी हाथ में एक तत्व आता है – वह है एकत्व।

–विमलेश आहूजा

कविता : नरेश कुमार निक्की

मन के अच्छे होते हैं बच्चे

दिल से कोमल होते बच्चे,
खुशियाँ नित बढ़ाते बच्चे।
पिता के नयनों के तारे हैं,
माँ के बनें सहारा बच्चे।।

मिल जुलकर रहते हैं बच्चे,
खुश होते और हँसते बच्चे।
अपने में ही मगन हैं रहते,
दर्द किसी से न कहते बच्चे।।

हृदय इनका निर्मल होता,
रूई की भाँति होते बच्चे।
अपना नहीं पराया कोई,
सबसे हिल–मिल रहते बच्चे।।

मन के अच्छे होते हैं बच्चे,
धुन के पक्के होते हैं बच्चे।
दृढ़–संकल्पी होते हैं ये,
देश का भविष्य होते हैं बच्चे।।

कथा– महाभारत से : पृथ्वीराज

अपवित्र अन्न

महाभारत का भयंकर युद्ध अट्ठारह दिन चला। इन अट्ठारह दिनों में कौरवों और पाण्डवों के तरफ से अनगिनत वीर सैनिक मारे गये। युद्ध के अन्त में भीम ने दुर्योधन को गदा युद्ध में मार दिया। भीष्म पितामह कई दिनों से बाणों की शैय्या पर पड़े थे।

भीष्म पितामह केवल युद्ध विद्या में ही कुशल महारथी नहीं थे। वे राजनीति और धर्मनीति के महान ज्ञाता भी थे।

जब युधिष्ठिर के सम्राट होने की घोषणा हो गई, तब भगवान श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से कहा– "पितामह भीष्म हम सब में पूज्य हैं। युद्ध में वे दुर्योधन की ओर से अवश्य लड़े, लेकिन मन ही मन वे हमारी विजय चाहते थे। पितामह जानते थे कि हमारा पक्ष धर्म का पक्ष है। अब युधिष्ठिर का राज्याभिषेक होना है। हमें राज्य, धर्म, नीति के सम्बन्ध में उचित शिक्षा, ग्रहण के लिए पितामह के पास अवश्य चलना चाहिए।

सभी पाण्डव पितामह भीष्म के स्नेह की छाया में पले थे। उनका बहुत आदर करते थे। इसलिए सभी भगवान श्रीकृष्ण से सहमत हो गए।

द्रौपदी ने कहा– "पितामह के अन्तिम दर्शन करने के लिए मैं भी अवश्य चलूंगी। उनके विचार सभी के लिए कल्याणकारी होंगे।"

पाँचों पाण्डव, द्रौपदी और श्रीकृष्ण युद्ध भूमि में वहाँ पहुँचे जहाँ पितामह भीष्म बाणों की शैय्या पर लेटे थे। पितामह के मुख पर पीड़ा का कोई भाव नहीं था। श्रीकृष्ण ने युद्धभूमि पहुँच कर पितामह को प्रणाम किया। भीष्म ने आँखे खोलकर देखा कि श्रीकृष्ण सहित पाँचों पाण्डव आये हैं और द्रौपदी भी उनके साथ है। सभी ने पितामह को प्रणाम किया तथा पितामह ने हाथ उठाकर सभी को आशीर्वाद दिया। कुछ देर शान्त रहने के बाद श्रीकृष्ण ने पितामह से कहा– "गंगापुत्र भीष्म! युद्ध समाप्त हो गया है। अगले सम्राट के रूप में धर्मराज युधिष्ठिर को प्रजा का पालन करना है। आप अनुभवी और नीति कुशल हैं। कृपया युधिष्ठिर को राज्य धर्म और लोक नीति का उपदेश दें।

भीष्म पितामह ने सभी पाण्डवों को अपने पास बुलाया फिर युधिष्ठिर सहित सभी पाण्डवों को राज्य संचालन तथा प्रजापालन के सम्बन्ध में राजा के आदर्श क्या होने चाहिए यह समझाया। राजा का धर्म और धर्मयुक्त नीति का उपदेश भी दिया। श्रीकृष्ण सहित सभी पाण्डव शान्त होकर पितामह के विचारों और अनुभवों को पूर्णतः ग्रहण करने का प्रयत्न कर रहे थे। एकाएक द्रौपदी की हँसी सुनकर सब चौंक पड़े।

इस अभद्रता की अपेक्षा द्रौपदी से किसी को भी नहीं थी, सभी द्रौपदी की ओर देखने लगे।

भीष्म पितामह ने कुछ पल मौन रहकर द्रौपदी की ओर देखा और पूछा– ''बेटी तुम क्यों हँसी?'' द्रौपदी अब गम्भीर थी, बोली– ''पितामह क्षमा करें, मुझसे भूल हो गई।''

पितामह ने फिर कहा– ''द्रौपदी तुम्हारे जैसी बुद्धिमान नारी बिना कारण के नहीं हँस सकती। मुझे बताओ, तुम्हारी हँसी के पीछे क्या कारण है।''

द्रोपदी ने पुनः क्षमा माँगी और बात को टाल दिया किन्तु पितामह के जोर देने पर द्रौपदी ने कहा– ''पितामह आप पूजनीय हैं। मुझे क्षमा करें, मैं आपका अपमान नहीं करना चाहती थी किन्तु आपके धर्मनीति के उपदेश सुनकर मुझे लगा कि जब दुर्योधन अनीति के मार्ग पर चल रहा था, जब राज्य सभा में दुशासन मुझे बालों से पकड़कर खींचता हुआ लाया था और मेरा चीरहरण हो रहा था तब आप भी राज्यसभा में उपस्थित थे। तब आपको क्या हो गया था? तब आपका यह धर्मज्ञान और नीति ज्ञान कहाँ चला गया था? मुझे लगता है यह सारा ज्ञान शायद आपने बहुत बाद में सीखा। यही सोचकर मुझे हँसी आ गई। एक बार फिर अपनी अभद्रता के लिए मैं क्षमा माँगती हूँ।

पितामह के मुख पर अशान्ति का कोई निशान नहीं था। उन्होंने शांत भाव से कहा– "बेटी द्रोपदी! क्षमा माँगने की कोई बात नहीं। तुम्हारा प्रश्न उचित है। राज्यसभा में सबसे बड़ा होने के कारण मेरा कर्तव्य था कि मैं दुर्योधन की अनीति और अत्याचार का विरोध करता, किन्तु बेटी मैं विवश था। उस समय मेरे शरीर में दुर्योधन के शोषण और अन्याय से कमाए गए धन द्वारा संचित अन्न से बना रक्त प्रवाहित हो रहा था। अब जबकि पाप के अन्न से बना सारा खून अर्जुन के बाणों द्वारा निकल चुका है। अब मेरी बुद्धि निर्मल हो गई। अब मैं अपने गुरुजनों द्वारा दी गई धर्मनीति की शिक्षा के आधार पर उचित और अनुचित का भेद कर सकता हूँ। मैं सोचता हूँ बेटी अब तुम्हारी शंका मिट गई होगी।"

पितामह ने फिर उपदेश देते हुए कहा– "अन्याय, दुराचरण और पाप द्वारा कमाए गए अन्न के प्रभाव से मनुष्य की बुद्धि और ज्ञान भी दूषित हो जाता है। द्रोपदी सहित सभी पाण्डवों को यह बात समझ में आ गई थी। द्रोपदी की शंका मिट चुकी थी। श्रीकृष्ण सहित सभी पाण्डवों ने गंगापुत्र भीष्म पितामह के चरणों में सिर झुका कर प्रणाम किया।

अन्त में आँखों में आँसू भर द्रोपदी ने अपना सिर पितामह भीष्म के चरणों मे रखकर भरे मन से एक बार फिर क्षमा माँगी। पितामह की आँखें नम हो गई थी। श्रीकृष्ण ने मुड़कर देखा और अपने नेत्र भी पीताम्बर से पोछ लिये व सभी वहाँ से चल दिये।

अनमोल वचन

★ हीरे के गुण ही अपने आप में उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है, सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।

★ ज्ञान का सूर्य उदय होने पर प्यार का जन्म होता है और नफ़रत समाप्त हो जाती है। जबकि अभिमान के कारण भक्ति और सुमति से भी हाथ धोना पड़ता है।

★ प्यार और सत्कार का मूल आधार ब्रह्मज्ञान है।

– गुरुदेव हरदेव जी

वर्ग पहेली

– प्रस्तुति :
विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

बाएं से दाएं →

1. जिस भारतीय राज्य की राजधानी गाँधी नगर है।
4. इनमें से जो शब्द फुटबाल के खेल से सम्बन्धित है :– रन, गोल, चौका।
5. जब भारत स्वतंत्र हुआ, माधवी की उम्र पन्द्रह वर्ष थी। माधवी का जन्म उन्नीस सौ..... में हुआ था।
6. भारत में नोट और सिक्के... रिजर्व बैंक जारी करता है।
9. शुद्ध शब्द छांटिए : मुजे / मुझे
11. इनमें से जो रामायण का एक पात्र है:– भीम, नल, कर्ण, भीष्म, कुंती।
12. प्राचीन का विपरीत शब्द।
14. जिस महीने की 17 तारीख को 'विश्व दूरसंचार दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

ऊपर से नीचे ↓

1. मावे से बनी एक मिठाई जिसके नाम का पहला हिस्सा एक फूल का नाम है और दूसरा हिस्सा एक फल का नाम है।
2. लोकसभा और राज्यसभा में से जिसके सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित नहीं किये जाते हैं।
3. भारत की सशस्त्र सेनाओं में तीन मुख्य सेनाएं हैं: थल सेना, वायु सेना और ..... सेना।
4. गोमती और नर्मदा में से जो नदी उत्तर प्रदेश राज्य में बहती है।
7. 'भारत रत्न' पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले वैज्ञानिक सी.वी. ... थे।
8. ब्राजील और यमन में से जो देश एशिया महाद्वीप में स्थित है।
10. जिस नदी के किनारे श्रीनगर स्थित है।
13. कायर का विपरीत शब्द।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

दो बालगीत : दिनेश 'दर्पण'

मिठाई की दुकान में

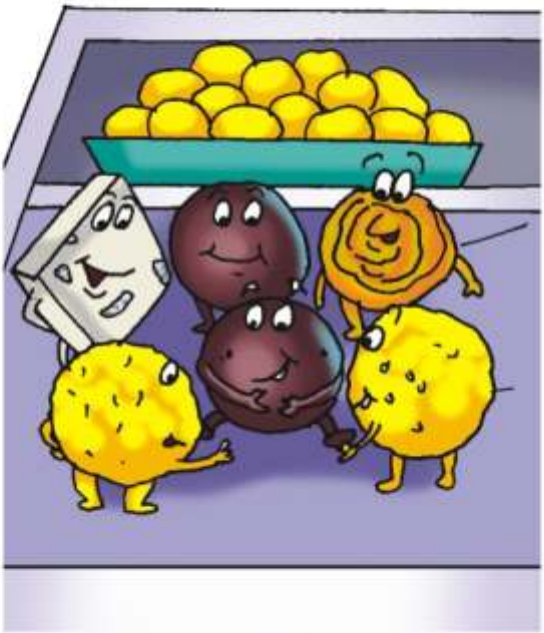

रसगुल्ले का सुनकर शोर,
चमक उठी जलेबी और।

लड्डू ने था मुँह फुलाया,
बरफी ने भी कान लगाया।
जोर लगाकर बोला पेड़ा,
रूप हमारा क्यों है टेढ़ा।
रबड़ी ने जब सुलह कराई,
यह तरकीब सभी को भाई।

रसगुल्ले ने पकड़े कान,
लड्डू की खिली मुस्कान।
जल्दी में बैठक बुलवाई,
समझौते पर मुहर लगाई।
सदा बुराई से मुँह मोड़ो,
अच्छाई से नाता जोड़ो।

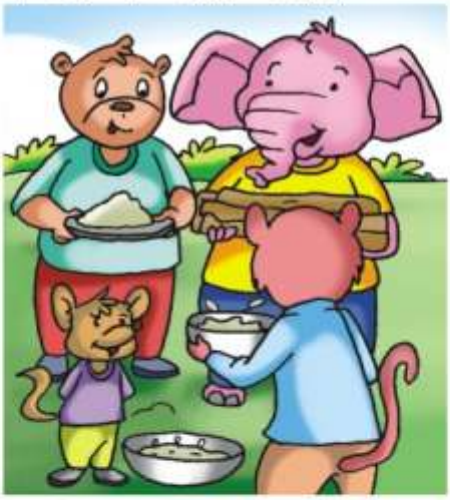

सबने मिलकर खीर बनाई

चीकू चूहा चावल लाया,
मीकू बन्दर दूध लाया,
चीनी लाया भोला भालू–
हाथी दादा ईंधन लाया।

सबके हिस्से हुए इकट्ठे,
होते रहे देर हँसी ठट्ठे,
सबने मिलकर खीर बनाई,
मिल बांट कर सबने खाई।

जन्मदिन मुबारक

कविता (भूचोमण्डी)

प्रभजोत (नाभा)

रौनक (चन्द्रपुर)

निलेश (पटियाला)

कुमार (मुम्बई)

रत्नम (गोरखपुर)

सिमरनजोत (लोगोवाल)

ईयान (दिल्ली)

अनीश (मुम्बई)

हरजप (करनाल)

बीरकमल (फरीदकोट)

साहिल (दिल्ली)

अश्विना (दिल्ली)

मुस्कान (भिवानी)

उत्कर्ष (चिरैयाकोट)

प्रिया (पीलीभीत)

अंशिका (मथुरा)

नमन (औरंगाबाद)

बन्नी (पंचकुला)

आस्था (तनपाइली)

रोहित (नागलोई)

अंकित (राजनगर)

प्रीति (मलहद)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक बार एक शिष्य ने अपने गुरूजी से पूछा-
'गुरूजी' कुछ लोग कहते हैं जीवन संघर्ष है। कुछ जीवन खेल है और कुछ उत्सव, इनमें कौन सही है गुरू देव?
पुत्र जिन्हें गुरू नहीं मिला उनके लिए संघर्ष, जिन्हें मिल गया उनके लिए खेल और जो लोग गुरू द्वारा बताए मार्ग पर चल पाते हैं वही केवल जीवन को उत्सव का नाम देने का साहस जुटा पाते हैं।
गुरू जी के उत्तर के बाद भी शिष्य संतुष्ट नहीं लग रहा था। तभी गुरू जी ने शिष्य को एक कहानी सुनाई . . .
..... एक बार की बात है।

गुरुकुल में तीन शिष्यों ने अपना अध्ययन सम्पूर्ण करने पर अपने गुरुजी से गुरु-दक्षिणा के विषय में पूछा। गुरु देव मंद-मुस्कुराए और बोले .....
.....शिष्यों मुझे सूखी पत्तियों का एक थैला चाहिए।
वे तीनों शिष्य मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि उन्हें लगा कि वे बड़ी आसानी से अपने गुरुजी की इच्छा पूरी कर सकेंगे। वे बड़े ही उत्साहपूर्ण स्वर में बोले .....
....जी गुरुजी।
और वे कहकर जंगल की ओर निकल गये।
लेकिन वे यह देखकर हैरान रह गए कि जंगल में सूखी पत्तियां तो केवल मुट्ठी भर ही थी।
तभी उन्हें वहाँ एक व्यक्ति दिखा।

और उन्होंने उससे पूछा कि
जंगल में से सूखी पत्तियां कौन ले गया?
व्यक्ति ने उत्तर दिया कि सूखी पत्तियां ईंधन के रूप में पहले ही उपयोग हो चुकी हैं।
अब वे तीनों पास के गाँव में इस आशा से चल पड़े कि उन्हें वहाँ एक थैला सूखी पत्तियों का जरूर मिल जायेगा।
गाँव पहुँचते ही उन्होंने एक व्यापारी से एक थैला सूखी पत्तियों का देने को कहा। परन्तु वहाँ भी निराशा हासिल हुई। क्योंकि व्यापारी कुछ देर पहले ही सूखी पत्तियों की औषधि बनाकर बेच चुका था।
जो बन पड़ सकता था वह तीनों कर चुके थे। परन्तु उन्हें कहीं से एक थैला सूखी पत्तियों का नहीं मिला।
आखिरकार वे थक हारकर वापस गुरुजी के पास लौट गए।

अरे आ गए पुत्रों, आओ। ले आए बैला।
तीनों के सर झुके रह गए। पूछने पर एक शिष्य ने बताया कि ....
...गुरूजी हमें लगा था कि सूखी पत्तियां तो ऐसे ही व्यर्थ पड़ी रहती हैं हम शीघ्र ही ले आऐगें। परन्तु हमें वे कहीं नहीं मिली।
गुरूजी मुस्कुराए और बोले..
...अरे पुत्रों जैसे पेड़ों की सूखी पत्तियां भी व्यर्थ नहीं होती ऐसे ही ज्ञान रूपी वृक्ष की सूखी पत्तियां भी व्यर्थ नहीं हुआ करती, बल्कि उनके भी अनेक उपयोग हुआ करते हैं। जाओ ज्ञान का प्रकाश फैलाओ। मेरे लिए यही गुरू दक्षिणा है।
तीनों शिष्य प्रसन्न हो गए और गुरूजी को प्रणाम करके खुशी-खुशी घर चले गये।
वह शिष्य जो गुरू जी से कहानी सुन रहा था वह से बोला...
....गुरूजी मैं अच्छी तरह समझ गया कि इस दुनिया में कुछ भी व्यर्थ नहीं है। हर चीज़ महत्वपूर्ण है।

मंगल पर भी था कभी पानी

वैज्ञानिकों को अब इस बात पर यकीन हो गया है कि बहुत पहले मंगल ग्रह पर प्रलय आई थी। 'न्यू साइंटिस्ट' ने 'आराम चाओस' क्रेटर (गड्ढा) के अध्ययन की रिपोर्ट छापी है। इसमें कहा गया है कि आज से लगभग साढ़े तीन से ढाई अरब वर्ष पहले इस क्रेटर के स्थान पर एक गहरी झील थी जिसके ऊपर बर्फ की मोटी परत जमी हुई थी।

तापमान में परिवर्तनों के कारण झील का जल तट से ऊपर उठ गया और जल नहरों में बह निकला। इन नहरों की रूप–रेखा वैज्ञानिकों को मंगल की सतह पर मिली है। यह झील इतनी गहरी थी कि इसका जल पूरे एक महीने तक बहता रहा, ऐसा वैज्ञानिकों का अनुमान है। अब ये वैज्ञानिक क्रेटर के तले का अध्ययन करेंगे इस उम्मीद में कि शायद झील में कभी जिन सूक्ष्म जीवों का वास था वह यहाँ बचे रहें हों।

डायनासोर का सबसे बड़ा जीवाश्म मिला

अर्जेंटीना के पाटागोनिया क्षेत्र में जीवाश्म वैज्ञानिकों ने डायनासोर का विश्व का सबसे बड़ा जीवाश्म खोज निकालने में सफलता प्राप्त की है। ऐसा माना जा रहा है कि यह जीवाश्म एक नई प्रजाति टीटानासोर का है। जिसकी गर्दन एवं पूंछ लंबी थी और यह चार पैरों वाला था। दक्षिणी अर्जेंटीना के ट्रिलयू शहर स्थित एजिडियो फेरूगुलियो संग्रहालय के जीवाश्म वैज्ञानिक जोस लुईस कारवालिडो के अनुसार डायनासोर का वजन चौदह अफ्रीकी हाथियों के बराबर और लगभग सौ टन का रहा होगा। (वार्ता)

12 वर्ष का बच्चा है अद्‌भुत स्मरण शक्ति का स्वामी

चेन्नई। क्या कोई पांच सेकेंड में यह बता सकता है कि किसी वर्ष की किस तारीख को कौन–सा दिन होगा। तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में रहने वाला 12 वर्षीय श्रीराम बालाजी ऐसी अद्‌भुत स्मरण शक्ति का स्वामी है कि वह तारीख बताते ही पांच से भी कम सेकेंड में बता देता है कि उस तारीख को

कौन–सा दिन था। उसकी अद्भुत स्मरण शक्ति के लिए उसे 'डेट प्रिंस' का नाम दिया गया है।

चेन्नई के केंद्रीय विद्यालय में पढ़ने वाले श्रीराम बालाजी को 1500 सालों का रिकॉर्ड याद है। उसकी कमाल की याद्दाश्त के कारण उसका नाम 'इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स' तथा 'तमिलनाडु बुक ऑफ रिकार्ड्स' में दर्ज किया जा चुका है। चेन्नई में आयोजित एक कार्यक्रम में जब श्रीराम ने अपनी अद्भुत स्मरण शक्ति का प्रदर्शन किया तो सवाल पूछने वाले भी चकित रह गए। सवाल करने वाले लोगों ने उससे वर्ष 1900 से 2700 के बीच की 30 से अधिक तारीखें बताई और श्रीराम तीन से पांच सेकेंड में उन्हे दिन बताता जा रहा था। करीब 200 लोगों के सामने उसने अपनी अद्भुत क्षमता का लोहा मनवाया और सभी सवालों के ठीक–ठीक जवाब देकर दोनों रिकॉर्ड किताबों में अपना नाम दर्ज कराने में सफलता हासिल की।

माचकोट में मिला दुर्लभ कछुआ

जगदलपुर। आमतौर पर चंबल क्षेत्र के स्वच्छ जल में पाए जाने वाले 'टेंट टेरियन' कछुए बस्तर के माचकोट क्षेत्र में पाया गया है। दुर्लभ प्रजाति के ये शाकाहारी कछुए की पीठ पर टेंट तंबू बना होने से शिकारियों की नज़र इन पर हैं। संभाग मुख्यालय से करीबी माचकोट वन परिक्षेत्र के एक तालाब में विशेष प्रजाति का 'टेंट टैरियन' के साथ अन्य प्रजाति के कछुए देखे गए हैं।

ग्रामीणों के अनुसार तालाब में इससे पहले भी कछुए देखे गए थे, लेकिन इस बार नई किस्म के कछुए आने से शिकारी सक्रिय हो गए हैं। इससे पर्यावरण और पशु प्रेमी चिंतित हैं। वन विभाग से जुड़े कुछ अधिकारियों ने कहा कि विशेष प्रजाति के ये कछुए खोलाब नदी के जरिए बारिश में तालाब तक पहुँचे होंगे। 'टेंट टेरियन' कछुआ भारत के चंबल क्षेत्र में बहुतायत में पाया जाता है। लेकिन बस्तर में इसकी संख्या कम है। इस प्रजाति के कछुए के ऊपरी खोल 'टेंट तंबुनुमा' की तरह होती है। प्राणी विज्ञान में इसे 'कछुआ रिटोरिया' कहा जाता है। स्वच्छ पानी में रहने वाले 'टेंट टेरियन' शाकाहारी होते हैं और दो समूह में 4 से 9 अंडे देते हैं। इस प्रजाति के कछुआ के ऊपरी खोल की लंबाई 26.5 सेंमीं तक होती है 'टैंट टेरियन' पेट वाले हिस्से पर सेल वर्गाकार और रंग पीला काला होता है।

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

कविता : गफूर 'स्नेही'

सर्दी के दिन

डराते और कंपाते।
सर्दी के दिन हैं आते।।
कोहरे के जाल सूर्य को–
बहुत–बहुत उलझाते।।

खा पोहे दूध जलेबी
चाय दूध कॉफी सुहाते।।
धूप के पर तो पहले–
कटे फटे मुरझाते।।

रात रजाई दो दो ओढ़े।
ऊनी कपड़े बहुत लुभाते।
खिड़की खुले तो दौड़कर
बंद कर पर्दा चढ़ाते।।

एक अजब अनोखा है–
पहलवान तक घबराते।
ठंडी हवाओ का सामना–
कोट कम्बल ही कर पाते।।

बूढ़े बाबा का कहना है–
दिन ये तंदुरूस्ती लाते।
सुनो स्वेटर मफलर मौजे–
हमें हिम्मत वही बढ़ाते।।

जीव–जन्तु – प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

जंगल का राजा शेर

'टाईगर जू' में घूमते–घूमते समीर अपने अंकल इमरान के संग जंगल के राजा शेर के पिंजरे के पास पहुँचा तो शेर ने जोर से दहाड़ लगाई। शेर की दहाड़ से चिड़ियाघर के सारे पशु–पक्षी घबरा कर चुप हो गए।

समीर निर्भिक व बहादुर था। उसने अपने अंकल इमरान से साहस, पराक्रम व शक्ति के धनी जंगल के राजा शेर के बारे में जानने की इच्छा प्रकट की। इमरान ने पिंजरे के आस–पास खड़े अन्य बच्चों को भी अपने निकट बुलाकर शेर के बारे में विस्तार से जानकारी दी –

बचपन में सर्कस में मैंने शेर को साइकिल चलाते हुए कई बार देखा था। उसके बाद आपके संग इस चिड़ियाघर में बंद पिंजरे में शेर को देख रहा हूँ। वनराज केसरी को जंगल में विचरण करते हुए देखकर शिकारी इनका शिकार करके इनकी खाल और हड्डियों की तस्करी करके खूब रुपया कमाया करते हैं।

शिकारियों के शिकार के कारण शेर जंगल से धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। शेर के वंश को जीवित रखने के लिए गुजरात के गीर

जंगलों में सरकार ने इनके शिकार पर पूर्णतया पाबंदी लगा दी है इस कारण वहाँ चार सौ से अधिक शेर जूनागढ़, अमरोली और भावनगर जिले में फैले गीर के जंगलों में सुरक्षित अवस्था में स्वतंत्र रूप से घूमते हुए दिखाई देते हैं।

अफ्रीका शेरों की मातृभूमि है। एशिया और यूरोप के दक्षिण भागों में भी कुछ शेर वहाँ के राष्ट्रीय पार्कों में सैकड़ों की संख्या में पल रहे हैं। राजस्थान के सरिस्का अभियारण्य में शेर घूमते हुए नजर आ जाते हैं। पूर्व में उत्तर भारत के जंगलों में इनकी संख्या अधिक थी लेकिन अब वहाँ बड़ी मुश्किल से शेर नजर आते हैं।

शेर की मादा 108 दिन के गर्भ धारण किये रहने के पश्चात एक बार में दो से छः तक, एक फिट आकार व करीब तीन पौंड वजन के बच्चे पैदा करती हैं। भूखे शेर व अन्य हिंसक जानवरों के खा जाने के कारण मुश्किल से दो या तीन बच्चे जीवित रह पाते हैं।

नवजात बच्चे बाघ के बच्चों की तरह अंधे और सुकुमार होते हैं। तीन सप्ताह बाद वे चलने–फिरने लगते हैं तब बच्चों की माँ और अन्य शेरनियां उन्हें प्रशिक्षण देकर शिकार करना सिखाती हैं। शेर की औसत आयु लगभग 20 वर्ष होती है।

शेर की लम्बाई नौ फिट, कंधे की ऊँचाई साढ़े तीन फिट और पूंछ की लम्बाई साढ़े तीन फिट तक होती है। वजन बड़े से बड़े शेर का करीब 500 पौंड होता है। शेर में अपने से अधिक वजन उठाने की क्षमता भी होती है।

शानदार व्यक्तित्व, सुन्दर आकार के कारण माँ दुर्गा जैसी देवी शक्ति के वाहन के रूप में हिन्दू धर्मावलम्बी शेर की पूजा करते हैं।

वनराज शेर मनुष्य की तरह सामाजिक प्राणी है। शिकार के मामले में मिल–जुलकर काम करते हैं। इनके परिवार में 20 तक सदस्य होते हैं।

भूख लगने पर शेर किसी पर दया नहीं करता। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए छोटे–से छोटा चूहा या बड़े से बड़ा दरियाई घोड़ा,

जिराफ, हाथी, घोड़ा, जेबरा, शुतरमुर्ग, भैंसा व हिरण ही क्यों न हो सब को मार गिराता है।

बलवान बड़े शेर की एक बार की खुराक 50 से 60 पौंड मांस है। शिकार करते समय चालीस फिट की छलांग सरलता से लगा सकता है और प्रतिघंटा चालीस मील की रफ्तार से दौड़ सकता है। शेर बिना वजह किसी पर हमला नहीं करता। यह इसकी शान के खिलाफ है। हाँ बस भूख इसे सहन नहीं होती। शिकार नहीं मिलने की स्थिति में यह बैर और झड़े हुए फल खाकर भी अपनी भूख मिटा लेता है।

शिकार का इसका तरीका अलग तरह का है। शेर अचानक आक्रमण करके शिकार के झुंड को दौड़ाते हुए शेरनियों के सामने लाकर रूक जाता है। फिर अधिक खूंखार व फुर्तीली शेरनियों की टोली अपने अगले पैरों को झट से मोड़ कर झपटते हुए अपने दांतों और पंजों से शिकार की गर्दन पल भर में तोड़ देती हैं।

शिकार का मांस खाने के लिए शेरनियां पहल नहीं करती। पदवी के हिसाब से शेर ही सबसे पहले शिकार को खाता है। उसके बाद शेरनियां खाती हैं। फिर बच्चे बचे हुए हिस्से को खूब मजे से खाते हैं। ऐसे अनुशासनबद्ध तरीके से चलता है शेर का परिवार। मनुष्य की स्वार्थपूर्ण भावना से कोसों दूर रहने के कारण ही संगठन की शक्ति से शेर निर्विरोध रूप से जंगल का राजा बनता है।

शेर पेड़ पर चढ़ने में भी सक्षम होता है। इसे तैरना भी आता है। तैरते–तैरते तालाबों की मछलियां भी मजे से खाता जाता है। इसमें सबसे बड़ी कमी यह है कि यह कुम्भकर्ण की तरह 18–18 घंटे तक लगातार सोए रहता है। तीन–चार दिन में एक बार पेट भर कर पानी पीता है और शिकार की तालाश में सिर्फ छः–सात घंटे तक ही घूमता है।

अब आप पिंजरे में बंद शेर को कभी मत सताना और जो जानकारी मैंने आपको बताई उसे अन्य मित्रों को भी अवश्य बताना। इतना कहकर इमरान अंकल ने समीर के साथ सभी को टा–टा कहते हुए अपने गंतव्य स्थान की ओर प्रस्थान कर लिया। ●

बाल कहानी : दिनेश 'दर्पण'

मित्रता का महत्व

जिन दिनों दिल्ली में राजा अनंगपाल राज करते थे। उन्हीं दिनों शब्दभेदी बाण संधान की विद्या में गुरु रामदास जी का बड़ा नाम था। यही कारण है कि उनके आश्रम में इस विद्या को सीखने के लिए देश–विदेश के अनेक राजकुमारों की भीड़ लगी रहती थी।

पुथ्वीराज चौहान राजा अनंगपाल के नाती थे। जब पृथ्वीराज की उम्र सिर्फ पाँच वर्ष की थी। तब से उन्हें गुरु रामदास जी के आश्रम में भेज दिया था। उन्हीं दिनों चंद नामक एक भाट (चारण) पुत्र गुरु जी के आश्रम में रहकर विद्याध्ययन कर रहा था। उस समय उसकी उम्र सात वर्ष की थी। वह पढ़ने–लिखने में बहुत तेज था। गुरु रामदास जी चंद से खुश रहते थे। साथ–साथ रहते हुए पृथ्वीराज और चंद गहरे मित्र बन गये थे। पृथ्वीराज की जहाँ अस्त्र–शस्त्र की विद्या में रूचि अधिक थी, वहीं चंद काव्य कला के अध्ययन में विशेष रूचि रखता था। अब गुरु जी के आशीर्वाद के पृथ्वीराज और चंद दोनों ही समान रूप से अधिकारी थे।

एक बार गुरु रामदास ने अपने आश्रम में यज्ञ का आयोजन किया। खूब जोर शोर से यज्ञ की तैयारियां होने लगीं। गुरु जी ने चंद को आदेश दिया कि वह जंगल से आम के पत्ते तोड़कर लाये। चंद को अकेला जंगल जाते देखकर पृथ्वीराज ने भी चंद के साथ जंगल जाने की अपनी इच्छा गुरुजी के सामने रखी पर गुरु जी चाहते थे कि आम के पत्ते लेने सिर्फ चंद ही जाए; पृथ्वीराज के विशेष आग्रह करने पर गुरु जी ने पृथ्वी के आग्रह को मानकर उसे चंद के साथ जाने की अनुमति दे दी।

दोनों मित्र हँसते–हँसते जंगल में जा पहुँचे। उन्हें एक आम का पेड़ भी मिल गया। चंद ने पृथ्वीराज से कहा कि मैं पेड़ पर चढ़कर पत्ते तोड़कर गिराता जाऊँगा और तुम उन्हें इकट्ठे करते जाना परन्तु पृथ्वीराज को यह बात पसंद नहीं आई क्योंकि,वह स्वंय पेड़ पर चढ़कर पत्ते तोड़ना चाहता था। चंद के बहुत मना करने पर भी पृथ्वीराज पेड़ पर चढ़ने लगा। पृथ्वीराज के पीछे–पीछे चंद भी चुप होकर पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन यह क्या अचानक चंद का पैर पेड़ की छाल से फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा और गिरते ही बेहोश हो गया। चंद की यह दशा देखकर पृथ्वीराज के तो मानो पेड़ पर बैठे–बैठे ही प्राण सूख गये। उसने चाहा कि चंद की मदद करने के लिए वह तत्काल ही पेड़ से कूद पड़े किन्तु ऊँचाई अधिक होने से डाल से नीचे कूदना

आसान नहीं था। उसने धीरे–धीरे नीचे उतरने की कोशिश की पर सफल नहीं हुआ। मन में डर होने से वह कूद न सका और अपनी बेबसी पर आंसू बहाने लगा। जब उसने देखा कि उसके प्रिय मित्र का गिरने से सिर फूट गया है और खून बह रहा है तो उससे रहा न गया और तभी उसने देखा कि एक बाज चंद के सिर पर चोट पहुँचाने वाला है तो उसने हिम्मत करके अपने आँखें बंद की और चंद को बचाने के लिए कूद पड़ा। उसने सोचा चाहे मेरे प्राण चले जाएं पर मित्र की जान हर हाल में बचाना है और अगले ही पल चमत्कार हो गया। चंद और पृथ्वी के आश्रम में आने में देरी होती देख गुरु जी दोनों को खोजने निकल पड़े और ठीक उसी समय पेड़ के नीचे पहुँच गये। जब पृथ्वीराज कूदा तो उन्होंने फौरन पृथ्वी को अपने हाथों में झेल लिया और अपनी बाँहों में समेट लिया। गुरु जी ने फौरन सारी बात मन ही मन समझ ली वे दोनों को आश्रम ले आये और उनके उपचार करने में जुट गये।

अपने मित्र की संकट में मदद न कर पाने का पृथ्वीराज को बहुत दुःख था। उसे बहुत पछतावा हो रहा था। परन्तु जब गुरुजी ने उसके साहस और मित्र के प्रति प्रेम भाव की प्रशंसा की तब कहीं उसके मन का बोझ कुछ हल्का हुआ।

इतिहास में सम्राट पृथ्वीराज चौहान और महाकवि चंद बरदाई की मित्रता प्रसिद्ध है, मृत्यु के कठिन क्षणों में भी वे एक–दूसरे से अलग नहीं हुए।

ब्रह्माण्ड क्या है?

ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत सूर्य, पृथ्वी और सौर–प्रणाली आती है। निहारिकायें और अन्य सभी वस्तुएं ब्रह्माण्ड में नहीं आतीं। अभी तक खोजे जा चुके ब्रह्माण्डों में सबसे बड़े ब्रह्माण्ड का व्यास है। 250 करोड़ प्रकाश वर्ष और इस के अन्दर असंख्य आकाशगंगाएं हैं।

प्रस्तुतिः विभा वर्मा

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर 'ती' अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पेन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1 : गुजरात राज्य में बोली जाने वाली मुख्य भाषा कौन–सी है? ... ती

प्रश्न 2 : राजा नल की पत्नी का क्या नाम था? .... ती

प्रश्न 3 : आगरा के पास स्थित फतेहपुर सीकरी में किस सूफी संत की मजार है? ....ती

प्रश्न 4 : उत्तर प्रदेश की राजधानी किस नदी के किनारे पर बसी है? ... ती

प्रश्न 5 : गणेश जी की माता का क्या नाम है? .... ती

प्रश्न 6 : देवताओं के राजा इन्द्र की राजधानी कौन–सी है? ... ती

प्रश्न 7 : अहमदाबाद शहर किस नदी के किनारे पर स्थित है? .... ती

प्रश्न 8 : तिब्बत में मुख्य रूप से कौन सी भाषा बोली जाती है? .... ती

प्रश्न 9 : कर्ण की माता का क्या नाम था? .... ती

प्रश्न 10: 25वीं वर्षगांठ को क्या कहते हैं? .... ती

प्रश्न 11: उत्तर प्रदेश की पहली दलित महिला मुख्यमंत्री का क्या नाम है? ...ती

प्रश्न 12 :भीष्म के पिता शान्तनु ने किस केवट कन्या से विवाह किया था? ...ती

प्रश्न 13 : महाराष्ट्र का प्रसिद्ध अमरावती विश्वविद्यालय किस शहर में स्थित है? ... ती

प्रश्न 14 : वशिष्ठ ऋषि की पत्नी का क्या नाम था? .... ती

प्रश्न 15 : इलाहाबाद शहर गंगा, यमुना और किस नदी के संगम पर बसा है? .... ती

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

कविता : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

पुस्तक

पुस्तक ने पढ़ना सिखलाया,
जीवन से लड़ना सिखलाया,
उन्नति पथ बढ़ना सिखलाया,
लक्ष्य स्वयं गढ़ना सिखलाया।

तन–मन का सब उमस भगाया,
जीवन से सब तमस भगाया,
इसने ही संसार दिखाया,
सबसे करना प्यार सिखाया।

पुस्तक ने ही देव मिलाए,
मन को मीठे सेब खिलाए,
आस्था अरु विश्वास जगाए,
गीता और वेद बनाए।

इसने ही दुनिया को जोड़ा,
मन की हीन ग्रंथि को तोड़ा,
राग–द्वेष का गोला फोड़ा,
तिनका–तिनका मन का जोड़ा।

जीवन की सद् राह दिखाई,
मन की बिछुड़ी चाह मिलाई,
पग–पग में है वाह दिलाई,
सबके मन है थाह दिलाई।

संकलनकर्ता : गुरमीत सिंह (इंदौर)

कभी न भूलो

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।

– निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी

★ संयम और त्याग के रास्ते से ही शान्ति और आनन्द तक पहुँचा जा सकता है। –आइन्स्टीन

★ जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है न शोक करता है वह भक्त परमात्मा को अधिक प्रिय है। – वेदव्यास

★ केवल निष्पक्ष और ईमानदार लोगों के काम सुगन्ध देते हैं और फूल के समान खिलते हैं। – शर्ले

★ असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है।

– जयशंकर प्रसाद

★ कुरीति के आधीन होना कायरता है, उसका विरोध करना पुरुषार्थ है। – महात्मा गाँधी

★ आचरण दर्पण के समान है, जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है। – गेटे

★ धर्म दक्षता में, यश दान में, स्वर्ग सत्य में और सुख शान्ति में रहता है। मनुष्य को जन्म से नहीं बल्कि उसके क्रिया–कलापों से परखा जाना चाहिए। मुख्य बात है सदाचारी, अच्छे चरित्रवाला और अच्छे कर्म करने वाला मनुष्य अच्छा होता है और ओछे चरित्र वाला ओछे कर्म वाला व्यक्ति नीच होता है। – भगवान बुद्ध

★ आत्मा कुछ न कुछ अवश्य कहती है। उसकी सलाह मानना तुम्हारा धर्म है। – प्रेमचन्द

★ ज्ञान गहरे सागर के समान है। – हरदयाल

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

बैल खरीदने गया, बेल लेकर आया

अलगू चौधरी का एक बैल मर गया था। खेती–बाड़ी के लिए उसको एक बैल की बहुत जरूरत थी। अतएव एक दिन वह बैल खरीदने के लिए रुपये लेकर घर से निकला। पाँच हजार रुपये उसके पास थे। रास्ते में उसे कुछ ठग मिल गये। उनमें से एक ने उससे कहा– तुरन्त अमीर बनने का एक अच्छा तरीका है।

–वह क्या?– अलगू चौधरी उत्सुक हो उठा।

–आओ मेरे साथ– कहकर ठग ने उसे एक ऐसी जगह लाकर खड़ा कर दिया, जहाँ जुए का खेल हो रहा था। कई खिलाड़ी वहाँ मौजूद थे।

अलगू चौधरी ने देखा, तुरन्त कुछ खिलाड़ियों के रुपये दोगुने हो गये। वह कुछ ललचाया। तभी ठग ने उससे कहा– अगर तुम्हारे पास भी कुछ रुपये हैं तो अपनी तकदीर को अजमा लो। तकदीर ने साथ दिया तो अमीर बनते देर नहीं लगेगी। खेती–बाड़ी करते–करते मर जाओगे, मगर अमीर कभी नहीं बन पाओगे। बस, किसी तरह पेट भर सकोगे। जैसे–तैसे दिन काटोगे।

ठग की बात अलगू चौधरी के दिमाग में बैठ गयी। वह बोला– ठीक कहते हो भाई।

–फिर देर क्यों करते हो। निकालो रुपये और अजमा लो अपनी तकदीर!– ठग ने उसे प्रेरित किया।

रुपये निकाल कर अलगू चौधरी जुआ खेलने बैठ गया। शुरू में तो उसकी जीत होती रही। मनोबल खूब बढ़ा। खुशी भी हुई। मगर लालच ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। नतीजा हुआ कि आखिर में वह सभी रुपये हार गया। खूब पछताया। उसके पास सिर्फ पाँच रुपये बचे रहे। सिर पीटते वह वहाँ से निकला। समय काफी हो चुका था। उसे जोर से भूख लगी थी। मगर खाने के लिए पास में कुछ नहीं था। आसपास कोई दुकान भी नहीं थी।

निराश हो वह घर लौट रहा था कि एक आदमी बेल (बेल नामक फल) बेचता हुआ उसके करीब से गुजरा। उसने उसे रोका। चुनकर दो बेल उसने उससे पाँच रुपये देकर खरीदे। बेल बड़े–बड़े थे। मीठी महक उनसे आ रही थी। पास ही एक घने पेड़ की छांव में बैठकर उसने एक बेल खाया। खूब मीठा व स्वादिष्ट था बेल। फिर पास ही कुए के पास जाकर उसने हाथ–मुँह धोया। बेल खाकर उसकी भूख शान्त हुई। बचा हुआ एक बेल लेकर वह घर पहुँचा। तब तक संध्या घिर चुकी थी। घर पर एक दोस्त सुग्गन इंतजार कर रहा था। अलगू चौधरी पर नज़र पड़ते ही वह चहक उठा– घर में पूछने पर मालूम हुआ कि तुम एक बैल खरीदने गये हो, मगर देखता हूँ खाली लौट रहे हो, बैल नहीं मिला क्या?

–गया तो था जरूर एक बैल खरीदने मगर लौटा हूँ एक बेल लेकर। कह कर अलगू चौधरी ने आपबीती सारी घटना सुग्गन को बता दी।

सुनकर सुग्गन जोर से हँसा। फिर गंभीर हो बोला– भाई, लालच कभी अच्छी नहीं होती है। जुआ खेलना कभी अच्छी बात नहीं है। जो मेहनत और ईमान की कमाई से अमीर नहीं हो पाता, वह जूए से कभी नहीं हो पाता।

–भाई तुम्हारी बात तो खूब समझ में आ रही है।– अलगू चौधरी को सुग्गन की बात में सच्चाई नज़र आई।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

'ब्लैक आयरन वुड' यानि

लकड़ी है पर लौह के समान

बच्चों, अभी तक तो तुम यह जानते थे कि लकड़ी पानी में नहीं डूबती है। पर वास्तव में यह सच है कि दुनिया में एक लकड़ी ऐसी भी है जो जल में धातु की तरह डूब जाती है और तली में जा बैठती है।

दक्षिण अफ्रीका में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ जल में डूब सकने वाली लकड़ी के वृक्ष पाएं जाते हैं। इस वृक्ष का नाम है 'ओलिया लौरी फोलिया।' इस वृक्ष से प्राप्त लकड़ी सूखी अवस्था में भी जल में डूबने की क्षमता के कारण उसे 'ब्लैक आयरन वुड' अर्थात् काली लौह लकड़ी' कहते हैं। ब्लैक आयरन वुड के जल में डूबने का कारण वास्तव में उसका घनत्व होता है। प्लावन के नियम के अनुसार कोई ठोस वस्तु किसी द्रव में तभी तैर सकती है जब ठोस वस्तु का घनत्व द्रव के घनत्व से कम होगा। यदि ठोस वस्तु का घनत्व, द्रव के घनत्व से अधिक होगा तो वह उसमें डूब जाएगी। चूंकि 'ब्लैक आयरन वुड' का घनत्व जल के घनत्व से अधिक होता है अतः वह जल में डूब जाती है।

दुनिया में सबसे हल्की लकड़ी का नाम 'एस्काइनोमिने हिस्पिडा' है। वैसे आमतौर पर लोग कार्क को ही सबसे हल्की लकड़ी मानते हैं जो 'डाट' का प्रर्याय बन चुकी है जो अक्सर तुम आयुर्वेदिक दवा की दुकानों पर शिशियों में लगे ढक्कन को देखते होंगे। अब तो उसी आकार के प्लास्टिक के ढक्कन आने लगे हैं।

क्या आप जानते हैं?

- ★ महात्मा गाँधी जी को सर्वप्रथम रविन्द्रनाथ टैगोर ने 'महात्मा' कहा था।
- ★ सूर्य का प्रकाश जल के भीतर अधिकतम 400 मीटर की गहराई तक जा सकता है।
- ★ भारत पाकिस्तान की सीमा को निर्धारित करने वाली लाईन को 'रेड क्लीफ लाईन' कहा जाता है।
- ★ विश्व की सबसे प्राचीन धार्मिक पुस्तक ऋग्वेद है।

भैया से पूछो

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

प्रश्न : हमारी वाणी और कर्म कैसा होना चाहिए?

उत्तर : शुद्ध पवित्र व दिखावे से दूर; जिससे स्वयं को तथा अधिकतम लोगों को सदा के लिए लाभ हो जाये।

– कमल नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव कैसे किया जा सकता है?

उत्तर : किसी भी ईश्वर के ज्ञाता (ब्रह्मज्ञानी) से ईश्वर के दर्शन करके व फिर स्वयं शुद्ध जीवन जीने से।

– देवराज 'देव' (दोमाना, जम्मू)

प्रश्न : भैया जी! कोई मूर्ख बुद्धिमान कब बनता है?

उत्तर : बुद्धि का सदुपयोग करने पर। यद्यपि इसके लिए पारंगत गुरु का होना आवश्यक है।

प्रश्न : धन निरंकार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : हे निराकार परमात्मा! तू धन्य है।

– रमाशंकर गुप्ता (सदर बाजार, बिलासपुर)

प्रश्न : प्राणायाम का क्या अर्थ होता है?

उत्तर : प्राणों का आयाम अर्थात् प्राणों का नियमन। प्राणों (यहाँ प्राणवायु) का आयाम (नियमन क्षेत्र) का अभ्यास करना है।

प्रश्न : माता–पिता अपने बच्चों को मर्यादा में रहना सिखाते हैं पर वे घर से ज्यादा बाहर खेलते–घूमते रहते हैं। जिस कारण उनमें अवगुण आ जाते हैं और अपनी मर्यादा और संस्कार भूल जाते हैं? क्या माता–पिता का कर्तव्य नहीं कि बच्चों का ख्याल रखें कि वे किससे दोस्ती करते हैं? किससे मिलते हैं? क्या करते हैं?

उत्तर : व्यवहारकुशल माता–पिता अपने बच्चों को सद्मार्ग पर ही रखते हैं। जिससे उनके कर्म व बोलों में एकरूपता आ जाती है।

इससे बाहर का प्रभाव उनके बच्चों को खराब नहीं कर पाता।
– अमित (वडसा)

प्रश्न : बच्चों का मन कोमल होता है उसे सत्संग, सेवा, सुमिरण से जोड़ने में समय लगता है, पर बुरी संगत में वे जल्दी जुड़ जाते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर : बुरा होना आसान होने के कारण।

प्रश्न : प्रत्येक विषय पर अथवा क्षेत्र का थोड़ा–थोड़ा ज्ञान अर्जित करना चाहिए या किसी एक विषय का पूर्ण ज्ञान?

उत्तर : किसी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए कुछ सहयोगी विषयों का अध्ययन भी करना जरूरी होता है, परन्तु उस अधूरे ज्ञान पर अधिकार जमाना भूल होती है।
– आनन्द (झुमरीतिलैया)

प्रश्न : धन वाले प्रायः दुःखी क्यों रहते हैं?

उत्तर : क्योंकि धन सुख का साधन है, स्वयं सुख नहीं।
– सुरेश खुराना पप्पी (जींद)

प्रश्न : खामोश रहना कब लाभदायक होता है?

उत्तर : जब अपने से आयु, विद्या तथा अनुभव से बड़े लोगों के पास बैठे हों।

प्रश्न : मनुष्य को दुनिया से घृणा कब होने लगती है?

उत्तर : जब उसकी स्वार्थपूर्ति में बाधा आती हैं।

प्रश्न : मेहनत कब रंग नहीं लाती?

उत्तर : जब कोई साहस छोड़ बैठे।
– पवन गिरधर (शार्दुलशहर)

प्रश्न : ऐसा कौन सा स्थान है, जहाँ पर किसी की भी सत्ता नहीं है?

उत्तर : ऐसा कोई स्थान नहीं है क्योंकि सर्वशक्तिमान ब्रह्म तो ज़र्रे–ज़र्रे में व्याप्त है।

प्रश्न : दुनिया में सबसे बड़ा कौन है?

उत्तर : जो अपने आप को सबसे छोटा समझे।
– शंकर सचदेव (भिलाई)

प्रश्न : अगर हीरे की पहचान जौहरी करता है तो जौहरी की पहचान कौन करता है?

उत्तर : हीरा।

ये सब

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

हे! ईश्वर तुम परमपिता हो
ये सब हमें सिखाओ।

असफलता या मिले पराजय,
तो क्या करना होगा?
और विजय के अहंकार से,
कैसे लड़ना होगा,
मानवता का मूलमंत्र क्या?
गुरुवर हमें बताओ।। ये सब ...

पापी अन्यायी से कैसे,
बिना शस्त्र टकराएँ?
समझ नहीं पाते हम कैसे,
इनको राह दिखाएँ?
ये कैसी भाषा समझेंगे?
तुम हमको समझाओ।। ये सब ...

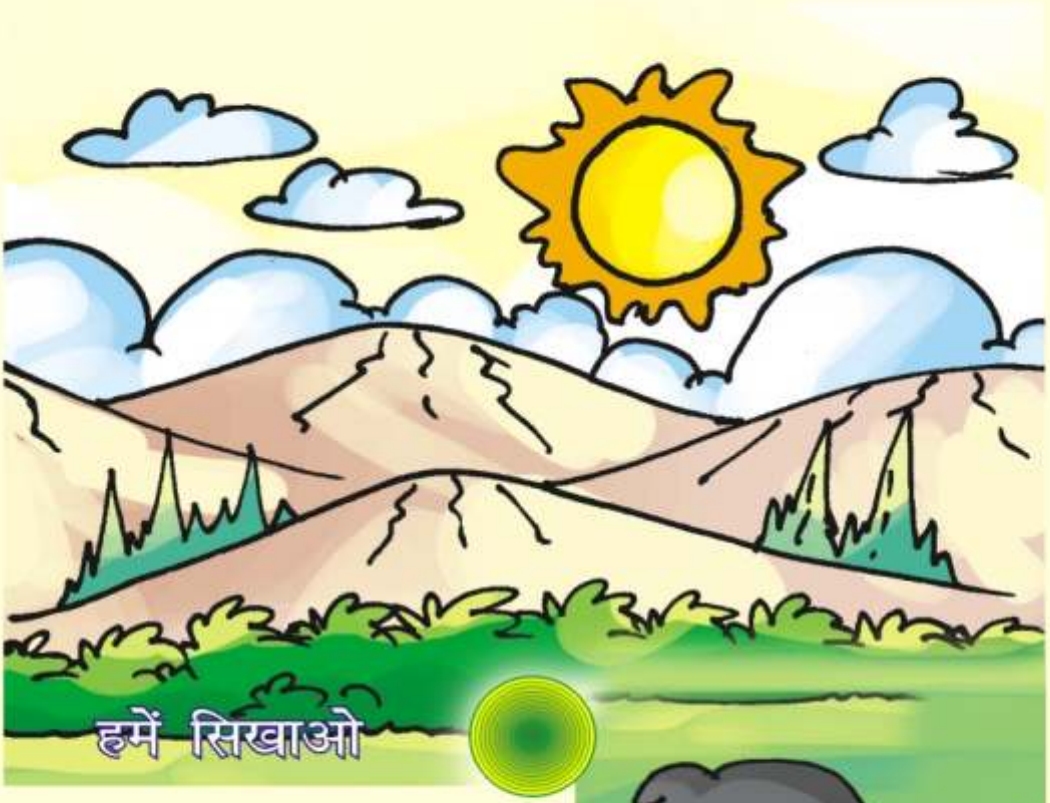

हमें सिखाओ

हो विश्वास हमें अपने पर,
सब कुछ कर सकने का।
कैसे साहस करें निरंतर,
हम आगे बढ़ने का?
तप कर सोने सा निखरें हम,
ऐसी राह दिखलाओ।। ये सब ...

छोड़ सभी धर्मों को कैसे,
मानवता अपनाएँ?
निर्भय और निडर होकर हम,
सब आनन्द मनाएँ।
मानव मानव सभी एक हों,
ऐसा पाठ पढ़ाओ।। ये सब ...

हे ईश्वर तुम परमपिता हो,
ये सब हमें सिखाओ।।

प्रेरक–प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

एक मदद ऐसी भी

बेंजामिन फ्रेंकलिन सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक हुए हैं। उन्हें एक बार कुछ धन की जरूरत महसूस हुई। झट वह अपने एक उद्योगपति मित्र के पास पहुँचे। फिर उससे बोले, "मुझे बीस हजार डालर कर्ज चाहिए।"

"ले लो," कहकर मित्र ने उन्हें तुरंत बीस हजार डालर पकड़ा दिये।

अपनी सुविधानुसार जब वैज्ञानिक महोदय एक दिन मित्र से लिया कर्ज उसे लौटाने आए तो मित्र ने साफ कहा, "इस रकम को अपने पास ही रखो।"

"क्यों?"

"जब कोई जरूरतमंद तुम्हारे पास आए, इस रकम से तुम उसकी मदद कर दोगे।" मित्र ने आगे कहा, "और जब वह आप से ली हुई रकम लौटाने आए तो आप उससे वह रकम कभी नहीं लोगे।"

"फिर क्या करूंगा?" वैज्ञानिक ने पूछा।

"कर्ज लौटाने वाले से आप यही कहेंगे कि वह भी उस रकम से किसी जरूरतमंद की मदद करें। इस तरह मेरे बीस हजार डालर से अनेक लोगों की अनवरत मदद होती रहेगी।"

"बहुत खूब!" फ्रेंकलिन मुस्कराए।

क्या आप जानते हैं?

- घरेलु मक्खी ग्रीष्मकाल में छः बार में प्रत्येक बार 120 अण्डे देती है।
- समुद्र में पायी जाने वाली सीपी प्रतिवर्ष 6 करोड़ और परजीवी एस्केरिस 2.7 करोड़ अण्डे देते हैं।
- एक तारा मछली (Starfish) एक बार में 1 लाख तथा ड्रोसोफिला (फल मक्खी) 20 हजार प्रतिमाह अण्डे देती है।
- धूम्रपान से फेफड़ों का कैंसर, ब्रांकाइटिस, वात–स्फीति (Emphysema), हृदय रोग, पाचन तंत्र के अल्सर जैसे रोग हो जाते हैं।
- 'तुलाम्बेरिया' नामक बैक्टीरिया, जिसकी एक बोतल जनसंख्या होने पर पूरी दुनिया नष्ट हो सकती है।

संग्रहकर्ता : विक्रमादित्य कुमार गुप्त (कुशीनगर)

बाल कहानी : साबिर हुसैन

बौनों का न्याय

चंदनगढ़ के राजा विजय सिंह राज्य में जगह–जगह अपने महल बनवा देता। वह सोचता कि वह जहाँ जाये वहाँ उसके विश्राम के लिए महल हों। राज्य में उसके अनेक महल थे।

उसी राज्य में जंगल के निकट एक झोपड़ी में गोपाल अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहता था। उसके पिता की मृत्यु जब वह बच्चा था तभी हो गई थी। उसके पास जो खेती योग्य भूमि थी वह लगान न दे पाने के कारण जमींदार ने उससे छीन ली थी। गोपाल जंगल से सूखी लकड़ियां काट कर लाता और उन्हें बेचकर अपना और अपनी माँ का पेट भरता।

गोपाल बड़ा दयालु स्वभाव का था। वह जंगल के सूखे पेड़ों को ही काटता। एक बार जंगल में उसे एक बहुत बड़ा सूखा पेड़ मिला। उसने सोचा इस पेड़ से उसे बहुत दिनों तक लकड़ियां मिलती रहेंगी।

गोपाल ने कुल्हाड़ी उठाई और पेड़ को काटने लगा तभी उसने सुना कोई कह रहा था– इस पेड़ को मत काटो।

गोपाल चौंक कर इधर–उधर देखने लगा।

–मैं तुम्हारे पैरों के पास खड़ा हूँ।

गोपाल ने देखा कि एक गुड्डे जैसा बौना वहाँ खड़ा था।

इस सूखे पेड़ से तुम्हें क्या लाभ होगा?– गोपाल ने आश्चर्य से पूछा।

–इस पेड़ के अन्दर से हमारी बस्ती का रास्ता है। हमारी बस्ती जमीन के अन्दर है तुम इस पेड़ को काट दोगे तो हम लोगों को नया रास्ता बनाना पड़ेगा।– बौना बोला।

–ठीक है, मैं इस पेड़ को नहीं काटूँगा।– कहते हुए गोपाल ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और दूसरा सूखा पेड़ खोजने चला गया।

एक दिन राजा जंगल में शिकार खेलने आया। वह एक हिरण का पीछा करते–करते सैनिकों से बिछुड़ गया। भूख–प्यास के कारण उसका बुरा हाल था। वह जंगल से बाहर आ गया। वह गोपाल की झोंपड़ी में जा पहुँचा। उस समय झोपड़ी में गोपाल की बुढ़ी माँ थी। उसने राजा को ठण्डा पानी पिलाया और खाने को मीठे फल दिये।

कुछ ही देर में उसे खोजते हुए सैनिक भी आ गये।

राजा ने सोचा कि एक छोटा महल यहाँ भी हो, जब वह शिकार खेलने आये तो वहाँ विश्राम कर सके।

–यहाँ पर मेरे लिए तुरन्त छोटे महल का निर्माण शुरू करा दो। – राजा ने आदेश दिया।

–महाराज! हम कहाँ जायेंगे।– गोपाल की माँ हाथ जोड़ते हुए बोली। विजय सिंह ने कुछ नहीं कहा और घोड़ा आगे बढ़ा ले गया।

दूसरे दिन सैनिकों ने आकर गोपाल की झोपड़ी तोड़ दी। गोपाल की माँ की इस दुःख से मृत्यु हो गयी। सैनिकों ने गोपाल को भगा दिया। वहाँ महल बनने लगा। गोपाल रोता हुआ जंगल में चला गया और एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा।

–तुम क्यों रो रहे हो?

गोपाल ने देखा उसके पास ही खड़ा बौना उससे पूछ रहा था।

–राजा ने मेरी झौपड़ी तोड़ दी, मेरी माँ भी मर गई। वहाँ राजा का महल बन रहा है।– गोपाल ने बताया।

–तुम रोओ मत। तुम सामने वाली गुफा में रहो। निश्चिन्त रहो, हम लोग तुम्हारा ख्याल रखेंगे।– बौने ने कहा।

गोपाल गुफा में चला गया। गुफा में उसके लिए स्वादिष्ट भोजन का थाल रखा हुआ था। गोपाल समझ गया कि उसके लिए भोजन की व्यवस्था भी बौनों ने की है। वह भोजन कर वहीं आराम करने लगा।

दूसरे दिन लोगों ने देखा कि राजधानी में बहने वाली शारदा नदी ने तेजी से कटान करना शुरू कर दिया है। जमीन के बड़े–बड़े टुकड़े टूट कर नदी में गिर रहे थे। नदी ने इतनी तेजी से कटान कभी नहीं किया था। नदी का कटान महल की ओर हो रहा था। नदी तेजी से महल की ओर बढ़ रही थी। मंत्री ने नदी का कटान रोकने के लिए पत्थर डलवाये किन्तु नदी का कटान न रूका। विजय सिंह यह देखकर चिन्तित हो गया कि यदि नदी का कटान न रूका तो उसका यह महल भी नदी में

कट कर ढह जायेगा।

चिन्तित विजय सिंह नदी के किनारे घूम रहा था। उसने देखा नदी के अन्दर सैकड़ों बौने छोटे–छोटे फावड़ों से खुदाई कर रहे हैं। विजय सिंह समझ चुका था कि नदी का कटान इन बौनों द्वारा की जा रही खुदाई के कारण हो रहा है।

राजा ने एक पत्थर नदी में फेंका जिससे खुदाई कर रहे बौने ऊपर देखने लगे। विजय सिंह ने हाथ के इशारे से बौनों को बुलाया। एक बौना जिसकी लम्बी दाढ़ी थी, वह नदी के बाहर आया।

–तुम लोग नदी क्यों...!

–महाराज! आपने सीधे–सादे गोपाल का घर तोड़ कर महल बनवा लिया इसलिए हम तुम्हारा यह महल नदी में बहा देंगे।– बौना विजय सिंह की बात काटते हुए बोला।

बौने की बात सुनकर राजा घबरा गया।

–अगर तुम जंगल के किनारे वाला महल और सात गाँवों की जमींदारी गोपाल को दे दो तो हम नदी का कटान बंद कर देंगे।– बौना बोला।

विजय सिंह ने बौने की बात मान कर अपना नया महल और सात गाँवों की जमींदारी गोपाल को दे दी। नदी का कटान बन्द हो गया। अब राजा भी प्रसन्न था और गोपाल भी।

मुस्कुराइये

एक साहब घर में खर्राटे मारते हुए सो रहे थे और उनकी नन्ही–सी बेटी अर्पिता पास ही खिलौनों से खेल रही थी। अचानक उन साहब ने सोते हुए करवट बदली और खर्राटे बंद हो गये।

अर्पिता ने पापा की तरफ देखा और चिल्लाई – मम्मी, मम्मी! जल्दी आओ पापा का इंजन बन्द हो गया है।

भरत : प्रवीन काल मी ए टैक्सी?

प्रवीनः यस सर यू आर ए टैक्सी?

लेख : कमल सौगानी

मेहनती चींटियां

लूसियाना के रेगिस्तानी इलाकों में 'अट्टा' नामक चींटियां पाई जाती हैं जो पेड़–पौधों से मीठा मधु इकट्ठा करती हैं। ये चींटियां प्रायः पेड़–पौधों का रस चूसने वाले भुनगों या एफिड से टपकने वाला मीठा रस इकट्ठा करती हैं किन्तु इनके रस का मुख्य स्रोत बलूत के छोटे वृक्ष होते हैं जिनसे सफेद मीठा रस टपकता है। इस प्रकार इकट्ठा किए हुए मधु का सुरक्षित भंडार बनाने के लिए ये चींटियां बहुत विचित्र पात्र का प्रयोग करती हैं।

आप जानकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे कि यह पात्र स्वयं कुछ जीवित मजदूर चींटियां होती हैं जिनका पेट मधु इकट्ठा करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है इसलिए प्रायः इन चींटियों को 'मधु कलश' चींटी का नाम दिया जाता है।

इन चींटियों का पेट बहुत लचीला होता है। वे चींटियां अपनी बस्ती तक ले जाने के लिए अपने पेट में काफी मधु इकट्ठा कर लेती हैं। यह मधु चींटियों द्वारा अन्त में बस्ती में स्थित कुछ जीवित कलशों में उडेंल दिया जाता है। प्रायः मधु कलश चींटियां जिनका पेट मधु से भर कर गुब्बारे जैसा फूल जाता है, एक अंधेरे सूखे कमरे में छत की दीवार से लटकी रहती हैं। इनके पेट में सुरक्षित मधु बस्ती की चींटियों को अकाल पड़ने पर काम आता है।

मधु कलश चींटी और बस्ती की एक साधारण मजदूर चींटी के शरीर में कोई अंतर नहीं होता। बाहर से मधु इकट्ठा करने वाली हर मजदूर चींटी देखती है कि बस्ती में कोई मधु कलश खाली नहीं है तो वह बस्ती की किसी भी भूखी मजदूर चींटी को मधु की एक बूंद स्वीकार कर लेने का अनुरोध करती है। यह भूखी चींटी इसके लिए तैयार हो जाती है फिर अपनी भूख के कारण मधु स्वीकार करने वाली चींटी और मधु की मांग करती है फिर तो बाहर से आने वाली हर चींटी अपना मधु इसी →

प्यारे तोते

कविता : कमलसिंह चौहान

डाली–डाली उड़ते तोते,
आपस में बतियाते तोते।
लाल मिर्च खूब खाते,
टें–टें करते गाते तोते।।

हरियाली में ये छिप जाते,
आसमान में उड़ते जाते।
आम पके तो लूट मचाते,
चोंच मारते जाते तोते।।

लाल चोंच है मन को भाती,
आंखें गोल–मटोल ही लगती।
गले में सुन्दर रेखा काली,
हरे पंख के होते तोते।।

पालो तो ये ढल हैं जाते,
अपनी बोली में ये गाते।
सबसे मिलते प्रेम के भूखे,
कितने प्यारे होते तोते।।

→ चींटी के पेट में उड़ेलती जाती है। इस भूखी चींटी का लालच इसके लिए बहुत महंगा सिद्ध होता है। पेट में मधु भरकर फूल जाने से उदर के अन्य भाग दब जाते हैं और पेट की लचकीली दीवारें अपने अधिकतम सीमा तक तन जाती हैं अब यह जीवित मधु कलश चींटी और कोई काम नहीं कर सकती है और अन्य दूसरी मधु कलश चींटियों की भांति अपनी बस्ती के एक अंधेरे कमरे में जहाँ दूसरी मधू कलश चींटियां रहती हैं जाकर छत से लटक जाती हैं।

अमरीका में रेगिस्तानी इलाकों में पाई जाने वाली कुछ मधु कलश चींटियों का पेट एक सेंटीमीटर तक फूल कर गुब्बारा जैसा बन जाता है। प्रायः एक बस्ती में लगभग 300 मधु कलश पाये जाते हैं और प्रत्येक मधु कलश चींटी अपने वजन से 9 गुना अधिक वजन का मधु अपने पेट में जमा रखती है।

लघु–कहानी : ईलू रानी

सवाल 'इज्जत' का

एक बार एक सौदागर एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहा था। सहसा उस पर तीन चोर टूट पड़े। सौदागर ने भी बड़ी वीरता से चोरों का मुकाबला किया। लेकिन बेचारा सौदागर अकेला था, इस कारण वह उनसे मुकाबला करते–करते थक गया। तब चोरों ने उस पर काबू पा लिया।

हाँ, काफी उत्साह से चोरों ने सौदागर की जेब टटोलनी शुरू की। सौदागर ने जिस वीरता से उनका मुकाबला किया था, उससे चोरों ने यह समझा था कि जरूर इसके पास काफी धन है...।

लेकिन चोर उस समय ठगे से खड़े रह गये, जब उन्होंने सौदागर की पूरी तलाशी में भी मुश्किल से चार–पांच सिक्के हासिल किये।

एक चोर से रहा न गया, उसने सौदागर से पूछ ही लिया – "हद हो गयी। इतनी मामूली रकम बचाने के लिए तुमने इतने जोर से मुकाबला किया? यदि तुम्हारी जेब में सोने की दो–तीन मुहरे भी होती, तब तो जरूर तुम हम तीनों को जान से मार डालते?"

सौदागर ने जवाब दिया–

"सवाल रुपए–पैसे का नहीं, सवाल इज्जत का है। मैं अपनी गरीबी अजनबियों के सामने जाहिर नहीं होने देना चाहता था, मेरी जेब में क्या है, क्या नहीं, यह मेरा रहस्य था। किसी के भी सामने मैं इस रहस्य को क्यों खोलता? इज्जत की खातिर तो मैं अपनी जान भी दे सकता हूँ।"

'इज्जत' की बात सुनते ही तीनों चोर स्तब्ध रह गये... और चुपचाप दूसरे रास्ते से तेज कदमों से आगे बढ़ने लगे...।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

1. गुजराती 2. दमयंती 3. संत सलीम चिश्ती की 4. गोमती के किनारे
5. पार्वती 6. अमरावती 7. साबरमती के 8. तिब्बती 9. कुंती 10. रजत जयंती
11. मायावती 12. सत्यवती से 13. अमरावती में 14. अरुन्धती 15. सरस्वती

प्रस्तुति : छाया (आगरा)

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : सबसे बड़ा एयर लाइन?
उत्तर : बोइंग 747

प्रश्न : सबसे तेज जानवर?
उत्तर : फाल्कल

प्रश्न : सबसे बड़ी नहर?
उत्तर : स्वेज, 168 किलोमीटर

प्रश्न : सबसे छोटा महाद्वीप?
उत्तर : ऑस्ट्रेलिया

प्रश्न : सबसे बड़ा महाद्वीप?
उत्तर : एशिया

प्रश्न : सबसे बड़ा महाकाव्य?
उत्तर : महाभारत

प्रश्न : सबसे बड़ी खाड़ी?
उत्तर : मैक्सिको की खाड़ी (1,500,000 वर्ग कि.मी.)

प्रश्न : सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफॉर्म?
उत्तर : खड़गपुर, (बंगाल) 833 मीटर

प्रश्न : सबसे लम्बा टावर?
उत्तर : सी.एन. टावर, टोरांटो, (कनाडा) (555 मी. ऊँचा)

प्रश्न : सबसे खारा सागर?
उत्तर : डैड सी (मृतसागर)

इन्हें भी जानें

★ विश्व की सबसे प्राचीन धार्मिक पुस्तक – ऋग्वेद

★ 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' पुस्तक के लेखक – जवाहर लाल नेहरू

★ विश्व में सर्वप्रथम कागजी मुद्रा का आविष्कार 812 ई. चीन में हुआ था।

★ संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'लैनिनग्राड' मास्कों में है।

★ बीजक (कविता संग्रह) के लेखक – कबीरदास

★ अकबरनामा और आईना–ए–अकबरी, फारसी के लेखक – अबुल फजल

★ गीत गोविन्द के लेखक – जयदेव

★ महाभारत महाकाव्य की रचना – महर्षि वेदव्यास ने की थी

संग्रहकर्ता : रवि कुमार राहुल, रणजीत कौर (बराड़ा, अम्बाला)

संग्रहकर्ता : भारतभूषण शुक्ल

क्या आप जानते हैं?

★ भारत का सबसे बड़ा आवासीय भवन राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली हैं।

★ भारत का सबसे पुराना स्तूप बिहार में पिपराशिवा का स्तूप है।

★ भारत की सबसे लम्बी नहर इंदिरा गाँधी नहर या राजस्थान नहर (650 कि.मी. लम्बी) है।

★ भारत की सबसे बड़ी गुफा अमरनाथ (जम्मू एवं कश्मीर में पहलगाम से लगभग 44 कि.मी.) है।

★ भारत का सबसे बड़ा गुफा मंदिर एलोरा (महाराष्ट्र) है।

★ भारत की सबसे ऊँची चिमनी तालचर (उड़ीसा) में है जिसकी ऊँचाई 277.5 मी. है।

★ भारत का सबसे पुराना गिरिजाघर केरल में त्रिचूर जिले के पालायूर नामक स्थान पर है। इसका नाम सेंट थॉमस चर्च है तथा इसका निर्माण ईसा की 52वीं सदी में हुआ था।

★ भारत का सबसे बड़ा गिरिजाघर पणजी से 10 कि.मी. दूर ओल्ड गोवा में है जिसका नाम सी कैथेड्रल है।

★ भारत का सबसे बड़ा सिनेमा थियेटर 'थंगम' है जो मदुरै (तमिलनाडु) में स्थित है।

★ भारत का सबसे घनी आबादी वाला शहर मुम्बई है।

★ भारत का पहला कालेज फोर्ट विलियम कोलकाता में है।

★ भारत का पहला मेडिकल कॉलेज : मेडिकल कॉलेज बंगाल (अब कोलकाता मेडिकल कॉलेज) इसकी स्थापना 28 जनवरी 1835 को लार्ड विलियम बेंटिंग ने की थी।

★ भारत का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज : थांपसन कॉलेज रूड़की में है।

★ भारत ने अपना प्रथम साउंडिग राकेट 'नाइची अपाची' 21 नवम्बर 1973 को छोड़ा था। यह सबसे पहली सफल उड़ान थी।

पढ़ो और हँसो

एक व्यक्ति लाइब्रेरियन के पास गया और बोला–

पिछले हफ्ते मैं जो पुस्तक आप से ले गया था बहुत बोरिंग निकली। उसमें कोई ढंग की कहानी नहीं थी, बस केवल पात्रों के नामों की ही भरमार थी।

लाइब्रेरियन बोला – "अच्छा तो आप वही सज्जन हैं जो पिछले हफ्ते हमारी टेलिफोन डायरैक्टरी ले गये थे।

एक कम पढ़ा लिखा युवक अंग्रेजी भाषा का पूरा ज्ञान होने का दावा करता था। एक बार वह अपनी ससुराल गया। उसकी सास बातें करते–करते बेहोश हो गई।

डॉक्टर ने उससे पूछा : इनको क्या हुआ था?

युवक बोला : कुछ समझ में नहीं आया सर, थोड़ी देर पहले माता जी एकदम 'सैंस' में थी, पता नहीं अचानक कैसे 'नॉनसैंस' हो गई।

किसी के घर आया मेहमान वापस जाने का नाम नहीं ले रहा था। घर वाले उसे चलता करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उसे रोजाना दाल खिलानी शुरू कर दी। मेहमान दाल खाकर तंग आ गया।

एक दिन मेहमान और मेजबान घर के लॉन में बातें कर रहे थे कि मेजबान ने मेहमान से पूछा : आज कितनी तारीख है?

मेहमान बोला : सरकारी तारीख का तो पता नहीं पर आज दाल की 28वीं तारीख है।

एक आदमी ट्रेन में सफर कर रहा था। तभी टिकट चैकर आ गया।

टिकट चैकर बोला : बिना टिकट घूम रहे हो। बताओ कहाँ से आ रहे हो?

आदमी : साहब! जेलखाने से।

टिकट चैकर : जेल किस जुर्म में गये थे?

आदमी : जी बिना टिकट सफर कर रहा था।

रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे एक लालची व्यक्ति के पास बैठी औरत का बेटा आईसक्रीम नहीं खा रहा था।

औरत ने उसे 4–5 बार कहा, आइसक्रीम खा लो नहीं तो मैं तुम्हारी आइसक्रीम इनको दे दूंगी।

औरत ने बार–बार ऐसा कहा तो वह व्यक्ति झल्लाकर बोला– मैडम जल्दी फैसला कर लो, आइसक्रीम के चक्कर में मैं एक स्टेशन आगे आ गया हूँ।

मगन :(छगन से) ऐसी कौन सी संख्या है जो निरंतर बढ़ती ही चली जाती है। कम नहीं होती।
छगन : मुझे नहीं मालुम।
मगन : अरे तुझे नहीं पता! भारत की जनसंख्या निरंतर बढ़ती रहती है।

शिक्षक : हमारे क्लास में सबसे ज्यादा कौन से शब्दों का उपयोग होता है।
विद्यार्थी : सर! मुझे मालुम नहीं।
शिक्षक : बहुत अच्छा! बैठ जाओ। – आजाद पी. धाक (बड़ौदा)

इस कमरे की छत में कई दरारे हैं जिसके कारण बरसात का पानी सीधा कमरे में आता है। आखिर यह सब कब तक चलेगा। किरायेदार ने मकान मालिक से शिकायत करते हुए कहा।

बरसात के खत्म होने तक– मकान मालिक ने जवाब दिया।

टीचर : (नीतू से) विटामिन–सी सबसे ज्यादा किस में होता है?
नीतू : मिर्च में।
टीचर : वह कैसे?
नीतू : मिर्च खाते ही सब सी–सी करने लगते हैं

बच्चों की देखभाल के लिए महिला उम्मीदवार से पूछा–
– क्या आपको बच्चों के साथ रहने का कुछ अनुभव है?
– जी हाँ; मैं खुद कई वर्ष तक बच्ची रही हूँ। महिला ने जवाब दिया।

–गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

अक्टूबर अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम : गर्वी — आयु 12 वर्ष
7/5, निरंकारी कालोनी
दिल्ली

द्वितीय :अंजलि — आयु 12 वर्ष
1066, सेक्टर–38 बी
चण्डीगढ़

तृतीय : खुशी — आयु 11 वर्ष
308, महावीर नगर
भरथना (इटावा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

जगरूप सिंह पाल (अधोया), मान्या कालड़ा (राजपुरा टाऊन, पटियाला), जान्हवी (नेरूला, नवी मुंबई), सोनालिका डिगरा (छन्नीरामा, जम्मू), मेधा रानी (कैलाचक), प्रथम (इंदिरा पुरी, पटियाला), हार्दिक (सोरांव, इलाहाबाद), चिंकी (कलन्दर चौक, पानीपत), मोहित कुमार (गोविन्दपुरी, दिल्ली), अनुराग कुमार (गौशाला, रामगढ़ कैण्ट), संजना कुमारी (धनावल), आकृति (बराड़ा), सुवंशी (रूपराम नगर, इंदौर), एकता (आगरा), श्रेयान (शिवडी, मुंबई), याशिका (करनाल)।

दिसम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 दिसम्बर तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतियोगियों के नाम प्रकाशित किये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के फरवरी अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेटबैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बोधकथा : कमल जैन

इतने प्यार से ...

एक महात्मा एक पेड़ के नीचे प्रभु ध्यान में बैठे थे। तभी गुस्से से भरा एक आदमी आया और उसने महात्मा के शरीर पर थूक दिया। उसने उन्हें अनेक गालियां भी दी। जब वह चुप हुआ तो महात्मा ने थूक को चादर से पौंछा और कहा–

"मित्र! कुछ और भी कहना चाहत हो?"

महात्मा की बात सुनकर वह आदमी चौका– "थूकने और गाली देने वाले को भी कोई इतने प्यार से मित्र कह सकता है।" वह चुपचाप वहाँ से चला गया।

महात्मा के एक शिष्य ने सब कुछ देखा था, वह क्रोध से भर उठा। उसने कहा– "गुरुदेव! वह दुष्ट आदमी आप पर थूक कर गया और आप पूछते हैं कि और कुछ कहना है?"

यह सुनकर महात्मा ने शिष्य से कहा– "कभी–कभी भाव इतना बड़ा होता है कि शब्द छोटे हो जाते हैं। कोई प्रेम से इतना भर जाता है कि

शब्दों में कह नहीं पाता, इसलिए गले लगा लेता है। कोई क्रोध से इतना भर जाता है कि शब्दों के द्वारा कह नहीं पाता, इसलिए थूककर कहता है।

इधर महात्मा पर थूकने वाला आदमी रात भर सो नहीं सका। वह यकीन नहीं कर पा रहा था कि ऐसा भी आदमी हो सकता है, जो थूकने पर गुस्सा करने की बजाय मित्र कहकर पुकारे और पूछे कि कुछ और कहना है, सुबह होते ही वह महात्मा के पास पहुँचा और माफी मांगने लगा।

महात्मा ने उस आदमी को सच्चे दिल से क्षमा करते हुए कहा– "जो हो गया सो हो गया, हम तो आगे बढ़ गए हैं, कल की बात भूल गए हैं, लेकिन तुम कल की बात पर क्यों रूके हुए हो? अब खुशी–खुशी जाओ और एक नेक काम करो, इसी में तुम्हारी भलाई है ... ।"

इतना कहकर महात्मा अपने शिष्य के संग आगे कदम बढ़ाने लगे ... ।

अब वह आदमी खुद को ही घृणा से देखने लगा, दूसरे ही पल जब उसके मस्तिष्क में महात्मा के ये शब्द गूंजे– "जो हो गया सो हो गया.." इन शब्दों की ऊर्जा से उसने अपने आपको बदल लिया। ●

जानकारी : हरजीत निषाद

पशु–पक्षियों की औसत आयु

1. मक्खी	कुछ घंटे	16. कुत्ता	20 वर्ष
2. रानी मधु मक्खी	4 वर्ष	17. चील	100 वर्ष
3. मजदूर मधु मक्खी	6 माह	18. तोता	75 वर्ष
4. मछली	7 वर्ष	19. शुतुरमुर्ग	75 वर्ष
5. कोयल	10 वर्ष	20. उल्लू	65 वर्ष
6. चूहा	7 वर्ष	21. हाथी	80 वर्ष
7. खरगोश	10 वर्ष	22. मगरमच्छ	100 वर्ष
8. गिलहरी	7 वर्ष	23. गिद्ध	200 वर्ष
9. घोड़ा	30 वर्ष	24. सुअर	25 वर्ष
10. गधा	30 वर्ष	25. हिरण	50 वर्ष
11. गाय	20 वर्ष	26. भेंड़	10 वर्ष
12. बैल	30 वर्ष	27. कबूतर	15 वर्ष
13. भालू	30 वर्ष	28. मोर	20 वर्ष
14. शेर	30 वर्ष	29. कछुआ	150 वर्ष
15. ऊँट	45 वर्ष	30. जेब्रा	20 वर्ष

कविता : सत्यनारायण विश्वकर्मा

जाड़े की सुबह पढ़ाई

बहने लगी हैं सर्द हवायें,
जाड़े की ऋतु आई।
राहत मिली गर्मी से अब,
शुरू कीजिए भाई पढ़ाई।

पीले गेदों के फूल लुभाते,
खूब मखमली धूप सुहाते।
जाड़े की ठिठुरन को देख,
मम्मी ने निकाली है रजाई।

शुरू हो गई शीतलहर,
निकल गये हैं स्वेटर–मफ्फलर।
आलस भागा दूर किनारे,
मुर्गे जी ने तान सुनाई।

खाया–पीया हजम होता है,
ठण्ड में ब्रेड–पकौड़ा भाता है।
भूख की बात सुनते ही मम्मी,
मन ही मन मुसकाई।

परीक्षा में अंक आते अच्छे,
जो सुबह उठके पढ़ते बच्चे।
नाम कमाया है उसने,
जिसने की जाड़े में पढ़ाई।

लघु कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

मन का मैल

कृष्णा नदी के किनारे एक महर्षि का आश्रम था। अपने शिष्यों सहित वह वहीं रहते थे। आसपास के गाँवों में उनकी काफी ख्याति थी।

साल में एक बार महर्षि गाँवों में जाकर लोगों के दुःख–दर्द को सुनते एवं उन्हें उचित सलाह भी देते। बदले में गाँव वाले उन्हें कुछ–न–कुछ चीजें उपहार में दे दिया करते।

और सालों की तरह इस साल जब महर्षि गाँव में पहुँचे तो लोगों को बिजली की तरह उनके आने की सूचना मिल गयी। खुली जगह में एक घने पड़े के नीचे उन्होंने अपना आसन जमाया। देखते–ही–देखते गाँव वालों की भीड़ वहाँ जमा हो गयी। एक–एक कर महर्षि सबका दुःख–दर्द सुनने लगे। उन्हें उचित सलाह भी देते जाते। साथ ही उनके द्वारा लाए गए उपहार को स्वीकार करते जा रहे थे। काफी देर बाद जमींदार साहब सुसज्जित रथ पर सवार होकर वहाँ पहुँचे। उनके

तन पर बेशकीमती वस्त्र थे। गले में मोतियों की माला एवं दोनों हाथों की अंगुलियों में हीरे जड़ित अंगुठियां थीं। रथ से उतरकर महर्षि के करीब आ उन्हें प्रणाम कर वह बोले, ''मेरे पास सभी कुछ है। मगर मन अशांत है। कुछ उपाय बताइए।''

जमींदार की क्रूरता और उसकी दुष्ट नीयत से महर्षि भली–भाँति अवगत थे। अतः वह बोले, ''अपनी मूर्खता की वजह से तुम्हारे मन में अशान्ति है।''

''कैसी मूर्खता?'' किसी तरह अपने क्रोध को दबाकर जमींदार ने महर्षि ने पूछा।

महर्षि ने पास रखे एक नारियल को हाथ में लेकर कहा, ''अगर इसका बाहरी हिस्सा साफ–सुथरा हो और अंदर का फल सड़ा हो तो इसका क्या महत्व है?''

''कुछ नहीं।''

''बाहरी हिस्सा तन है तो अंदर का फल इसका मन। तुम्हारी मूर्खता यही है कि तुमने अपने तन को तो साफ–सुथरा रखा मगर मन को सड़ा दिया। मन के मैल की वजह से ही तुम्हारे जीवन में अशान्ति है। तुमने गरीब जनता का शोषण ही नहीं किया है, उन पर अत्याचार और अन्याय भी किया है जिनसे तुम्हारा मन काफी मैला हो चुका है? मन में, जब मैल है तो वहाँ शान्ति कहाँ से, कैसे आएगी?'' महर्षि ने दो टूक बात कही।

जमींदार सहमा। फिर बोले, ''अब क्या करूँ?''

''सद्व्यवहार और परोपकर करके ही अपने मन के मैल को धोकर साफ कर सकते हो तभी सच्ची शान्ति तुम्हें मिलेगी।''

अपनी भूल का एहसास जमींदार को हो गया। उन्होंने महर्षि की बात मान ली।

हँसती दुनिया खूब हँसाती।
ज्ञान की बातें हमें बताती।।

फोटो फीचर

देखो, मैं यहाँ खड़ी होकर अब क्या करने वाली हूँ। –आस्था (सिवनी)

ठहरो, मैं भी तुम्हारे पास आ रहा हूँ। –समदिश (खांबरा)

मैं अपनी कुर्सी पर इस तरह भी बैठ लेता हूँ। –आकाशदीप (खांबरा)

मैं भी पापा को बोलकर कुर्सी मंगवाऊंगी। –समप्रीति (कैथल)

मेरी मम्मी भी मेरे लिए कुर्सी और खिलौने लाने वाली हैं। –धैर्य (नोएडा)

मुझे तो यहाँ तैयार होकर बैठना अच्छा लगता है। –डेज़ी (राजिम)

फोटो फीचर

देखो मेरे नये कपड़े कितने अच्छे हैं। –मीत (ग्वालियर)

मैं इन कपड़ों में कश्मीर की गुड़िया लग रही हूँ न। –समप्रीति (दिल्ली)

चलो अब हँसती दुनिया की कहानियां पढ़ते हैं।
–याहवी (कोटा)

मेरी हँसती दुनिया भी आज ही आई है।
–आशीष (कोटा)

मैं तो अभी खिलोनों से ही खेल रही हूँ।
–समदृष्टि (पटियाला)

अरे ! तुम्हें पढ़ना नहीं आता क्या?
–प्रीत (गाजियाबाद)

फोटो फीचर

मेरे बाल अभी छोटे हैं, टोपी से पता ही नहीं चलता न। –रचित (वाराणसी)

अरे! मैं तो टोपी पहनना ही भूल गया। –कार्तिक (कोटा)

मेरा हैट कितना सुन्दर है न। –मोनिका

मैं तो अपनी ननिहाल से मिलने जा रही हूँ। –सुहानी (कोल्हापुर)

हम तीनों तो पिकनिक पार्टी में जा रहे हैं।

मैं भी कल पार्क में घूमने जाऊंगी। –कनिष्का

कहानी : बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

उपवास वाला व्रत

बरगद के पेड़ के नीचे आसन लगा कर बैठा बिट्टू बिलाव आते–जाते जानवरों को बहुत ध्यान से देख रहा था। मगर कोई भी उससे बात नहीं कर रहा था।

तभी बरगद के पेड़ की जड़ में बनाए बिल से विकी चूहा बाहर निकल कर इधर–उधर ताकने लगा। तभी उसकी नजर सामने बिट्टू पर जा पड़ी। बिट्टू को देखकर विकी के होश उड़ गये। वह डर कर वापस बिल में जाने लगा तो बिट्टू बोल पड़ा– विकी तुम हमसे डरो मत। मैं आज किसी भी चूहे को पकड़ कर नहीं खाऊँगा क्योंकि आज मेरा उपवास है। तुम मेरे साथ खेलो–कूदो।

विकी बिट्टू की बात सुन कर बोला– देखो बिट्टू, हमारे साथ कोई धोखा–धड़ी मत करना।

– मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। तुम हमारे पास आकर देख लो। बिट्टू ने कहा।

बड़ी हिम्मत कर के विकी बिट्टू के पास पहुँचा व बोला– क्या मैं तुम्हारी पीठ पर चढ़कर खेल–कूद सकता हूँ?

हाँ–हाँ, आज तुम्हें हमारे साथ खेलने–कूदने की पूरी आजादी है बिट्टू बोल पड़ा।

देखते ही देखते विकी बिट्टू की पीठ पर चढ़कर खेलने–कूदने लगा। उसके साथ पिंकी चूहिया, टनटन चूहा भी आकर खेलने लगे।

सुबह से शाम हो गई। उसी समय सामने से सोनू मुर्गा और गोलू खरगोश आते दिखाई दिये।

– विकी अपने दुश्मन बिट्टू के साथ यह कैसा खेल खेल रहे हो। कहीं वह तुम्हें पकड़ कर खा गया, तब क्या करोगे?– सोनू मुर्गा बोला।

तुम्हें पता नहीं सोनू। आज बिट्टू ने उपवास धारण कर रखा है। आज वह किसी को नहीं खाएगा। आओ तुम दोनों भी हमारे साथ खेल में शामिल हो जाओ।

देखो विकी हम दोनों बिट्टू के साथ नहीं खेल सकते हैं। बिट्टू हमें पकड़ लेगा और खा जाएगा। हम दोनों घर चलते हैं।

तभी बिट्टू सोनू को पकड़ने के लिए तेजी से उसकी ओर दौड़ा। इतने में सोनू उड़कर बरगद के पेड़ पर जा बैठा और गोलू पास की एक झाड़ी में छुपकर बैठ गया।

विकी बिट्टू की सारी चालबाजी समझ गया। वह जान बचाकर अपने बिल की ओर भागने लगा। तभी बिट्टू ने दौड़ कर विकी को

पकड़ लिया परन्तु उसके साथी पिंकी और टनटन भागने में सफल हो गये।

विकी हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाते हुए बोला– बिट्टू मुझे छोड़ दो, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

मैं तुम्हें तभी छोड़ूँगा जब तुम अपने दोस्त सोनू को मेरे हवाले करोगे वरना मैं तुम्हें खा जाऊँगा।

आपने तो उपवास धारण कर रखा है फिर हमें कैसे खाएंगे?– विकी पूछ बैठा।

बिट्टू बोला– विकी तुम्हें पता नहीं दिन डूबने वाला है और हमारा उपवास भी समाप्त होने वाला है। ऐसे में कुछ खाने की व्यवस्था तो करनी ही पड़ेगी न! मैं तुम्हें ही खाऊंगा वरना पेड़ से सोनू को नीचे हमारे पास बुलाओ। कई दिनों से मुर्गा खाने को नहीं मिला है। आज सोनू को खाकर ही अपनी भूख मिटाऊंगा।

विकी बोला– मुझे तुम छोड़ोगे तभी तो पेड़ पर चढ़कर सोनू को बुलाकर लाऊँगा।

ठीक है मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ। और तुम जल्दी से सोनू को मेरे पास बुलाकर लाओ।

'जान बची लाखो पाए' कहते हुए विकी अपने बिल में घुस कर बोला– सोनू तुम पेड़ पर से नीचे कभी मत उतरना वरना यह ढोंगी–पाखण्डी तुम्हें खा जाएगा।

तभी सोनू बोल पड़ा– विकी चिन्ता की अब कोई बात नहीं मेरा दोस्त जैकी कुत्ता आ रहा है। वह अभी इस दुष्ट बिट्टू का काम तमाम कर देगा।

जैकी का नाम सुनते ही बिट्टू के होश उड़ गये क्योंकि वह बिट्टू का जानी दुश्मन था।

जैकी के आने की बात सुनकर बिट्टू बचाओ–बचाओ चिल्लाते हुए भागने लगा। तभी सोनू बोल पड़ा– कहाँ भाग रहे हो बिट्टू क्या जैकी के साथ नहीं खेलोगे?

इतना सुनते ही बिट्टू और तेज भागने लगा और देखते ही देखते आँखों से ओझल हो गया।

बिट्टू के जाने के बाद सोनू पेड़ से नीचे उतर कर अपने दोस्त गोलू और विकी को पास बुला कर बोला– देखा मेरी अक्ल का कमाल। अगर मैंने जैकी का नाम नहीं लिया होता तो बिट्टू हमारी जान के पीछे ही पड़ा रहता।

सोनू की बात सुनकर विकी बोला– मैं कान पकड़ कर कसम खाता हूँ; आज के बाद कभी बिट्टू की बातों में नहीं आऊँगा। विकी की बात सुन कर सोनू और गोलू हँसते हुए अपने–अपने घर की ओर चल दिये।

–पाखण्डी लोगों से विश्व भरा पड़ा है। इसलिए आँखें खोलकर दिमाग से सोचकर ही कोई निर्णय लेना चाहिए।

अनमोल वचन

- अपने आपसे दूर भागने की कोशिश कभी मत करना। अपने मन को मजबूत करना सीखो।
- अच्छे सत्कर्म, माता–पिता की सेवा, गुरु–पूजा यह तीनों सद्गुण इन्सान को महान बना देते हैं।

प्रस्तुति : श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बड़नेरा)

प्रस्तुति : विकास कुमार, (बछवारा, बेगूसराय)

पहेलियां

1. एक धन है ऐसा, वह नहीं है पैसा।
   कड़ी मेहनत से आता सबका साथ निभाता।

2. काले तन का है राजा
   लाल पानी पीता है।

3. एक पहेली मैं बुझाऊ,
   सिर को काट नमक छिड़काऊं।

4. बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती है गोली,
   बच्चे, बूढ़े डर जाते, सुन इसकी बोली।

5. हरी डंडी, लाल कमान,
   खाये तो सी–सी करे इन्सान।

6. ऊंट की बैठक, हिरण की चाल,
   बोलो वह कौन है पहलवान।

(उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

रोचक बातें हड्डियों की

★ सबसे बड़ी हड्डी हमारी जांघ की होती है, अगर आप छः फुट लम्बे हैं तो यह 20 इंच लम्बी होगी।

★ सबसे छोटी हड्डी कानों की एक हड्डी होती है। इसे स्टिरप कहा जाता है। इसकी लम्बाई एक इंच के दसवें हिस्से के बराबर होती है।

★ क्या आपको पता है हमारे एक हाथ में ही 27 हड्डियां होती हैं। कलाई में 8, हथेली में 5 और अंगुलियों में 14 हड्डियां होती हैं।

★ नवजात शिशु के शरीर में 300 हड्डियां होती हैं, जबकि एक वयस्क व्यक्ति के शरीर में 206। इसका कारण यह है कि असल में इस बीच कुछ हड्डियां जुड़ जाती हैं।

प्रस्तुतिः प्रियंका चोटिया 'आंचल'

जानकारी : किरणबाला

क्या है मौत की घाटी

आपने मौत की घाटी या 'डेथ वैली' का नाम तो सुना होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह क्या है और कहाँ है और इसे मौत की घाटी क्यों कहा जाता है?

डेथ वैली उत्तरी अमेरिका में केलिफोर्निया के दक्षिण पूर्व में नेवडा की सीमा के पास है। यह उत्तरी अमेरिका का सबसे गर्म और सूखा स्थान है। इसकी लंबाई 225 किलोमीटर है और अलग–अलग स्थानों पर इसकी चौड़ाई 8 से 24 किलोमीटर के बीच है, इसकी तली का सबसे नीचा स्थान समुद्र तल से 282 फुट नीचे है।

इस घाटी की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जिसकी वजह से इसे मौत की घाटी कहा जाता है। इसका तापमान 49 डिग्री सेंटीग्रेट तक पहुँच जाता है। पानी तो जैसे यहाँ है ही नहीं क्योंकि वर्षा नाम मात्र की होती है। यदि कहीं पानी है भी तो वह भी खारा जो पीने योग्य नहीं है। सारी घाटी में बालू ही बालू नज़र आती है। पहले जब लोग अमेरिका जाते थे तो उन्हें इस घाटी से होकर ही गुज़रना पड़ता था। अत्यधिक तापमान और सूखा होने की वजह से अधिकांश लोग घाटी पार करते–करते मर जाते थे। इन्हीं भयानक परिस्थितियों के कारण ही इसका नाम 'डेथ वैली' पड़ा।

सन् 1870 में विशेषज्ञों ने जब इस घाटी का अध्ययन किया तो वहाँ हजारों इंसान और जानवरों की हड्डियों के ढांचे मिले। बाद में सन् 1933 में इस वैली को अमेरिका का नेशनल मोनूमेंट घोषित कर दिया। अब यह पर्यटकों के लिए एक रमणीय स्थल बन चुका है जिसे देखने हर वर्ष लाखों लोग जाते हैं।

पहेलियों के उत्तर :

1. विद्या 2. मच्छर 3. खीरा 4. बंदूक 5. मिर्ची 6. मेंढक

आपके पत्र मिले

सितम्बर अंक पढ़ा। 'सबसे पहले' लेख ने इस बार श्रेष्ठ कर्म करके अपना जीवन सुन्दर व सफल बनाने का परम शुभ संकेत दिया। कहानियों में 'पढ़ो–लिखो बनो महान', 'दुष्ट न छोड़े दुष्टता' 'मन को भा गयी।' 'सुई और तलवार' तथा 'श्रेष्ठ बुद्धि', प्रेरक–प्रसंग प्रेरणादायक लगे।

इसके अलावा हँसती दुनिया के पूर्व सम्पादक विनय जोशी जी को यादों के झरोखे में पढ़कर मन को दुःख पहुँचा और उनकी पुरानी यादों में खो गये।

'अजब दुनिया चमगादड़ की' जानकारी के लिए आप बधाई के पात्र हैं। 'पेड़–पौधे भी होते हैं मांसाहारी' की भी जानकारी रोचक व मजेदार लगी। कुल मिलाकर अंक लुभावना व सुन्दर लगा।

–श्याम बिल्दानी 'सादगी'
(सिन्धी बस्ती, बड़नेरा)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। इसका प्रत्येक अंक बड़ा ही ज्ञानवर्द्धक और रोचक लगता है। मैं बड़े चाव से हँसती दुनिया पढ़ती हूँ एवं इसके आने का इंतजार करती हूँ तथा अपने मित्रों को भी हँसती दुनिया दुनिया पढ़ाती हूँ इसमें 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी', 'अनमोल वचन', 'भैया से पूछो' पढ़ने से ज्ञान में वुद्धि होती है। सितंबर 2014 के अंक में बहुत ही सुन्दर एवं मनमोहक बातें थीं।

–चाहत शर्मा (काहरु, काँगड़ा)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मैं इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ती हूँ। मुझे इस पत्रिका में 'भैया से पूछो', 'कभी न भूलो' और 'पढ़ो और हँसो' पढ़ना अच्छा लगता है। मैं इस पत्रिका से कहानियां पढ़कर छोटे बच्चों को सुनाती हूँ और उस कहानी से क्या सीख मिलती है, वह समझाती हूँ। इससे बच्चों का सही मार्गदर्शन और मानसिक विकास होता है।

– मोनिका (मोडासा)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 गु	ज	2 रा	त	■	3 ज
ला	■	ज्य	■	4 गो	ल
5 ब	त्ती	स	■	म	■
जा	■	6 भा	7 र	ती	8 य
9 मु	10 झे	■	म	■	म
11 न	ल	■	12 न	13 वी	न
■	14 म	ई	■	र	■

TU HI NIRANKAR
SUPER Aqua®
SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM
AN ISO 9001:2000 Certified Company.
SUPER AQUA®
R.O. System
Manufacturer :
Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System
पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें
पेश है, Super Aqua एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के U.V. चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।
तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ SUPER AQUA ही अपनाएं।
Free Demo Water Testing
स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन
For Contact Customer Care : 09910103767 09650573131
आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE
Delhi Off. G-3/115, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-85 Nr. Mother Dairy
Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower Badlapur (East) Thane, Maharashrta, (M) 09930804105
Email : superaqua1@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2012-14
Licence No. U (DN)-23/2012-14
Licenced to post without Pre-payment

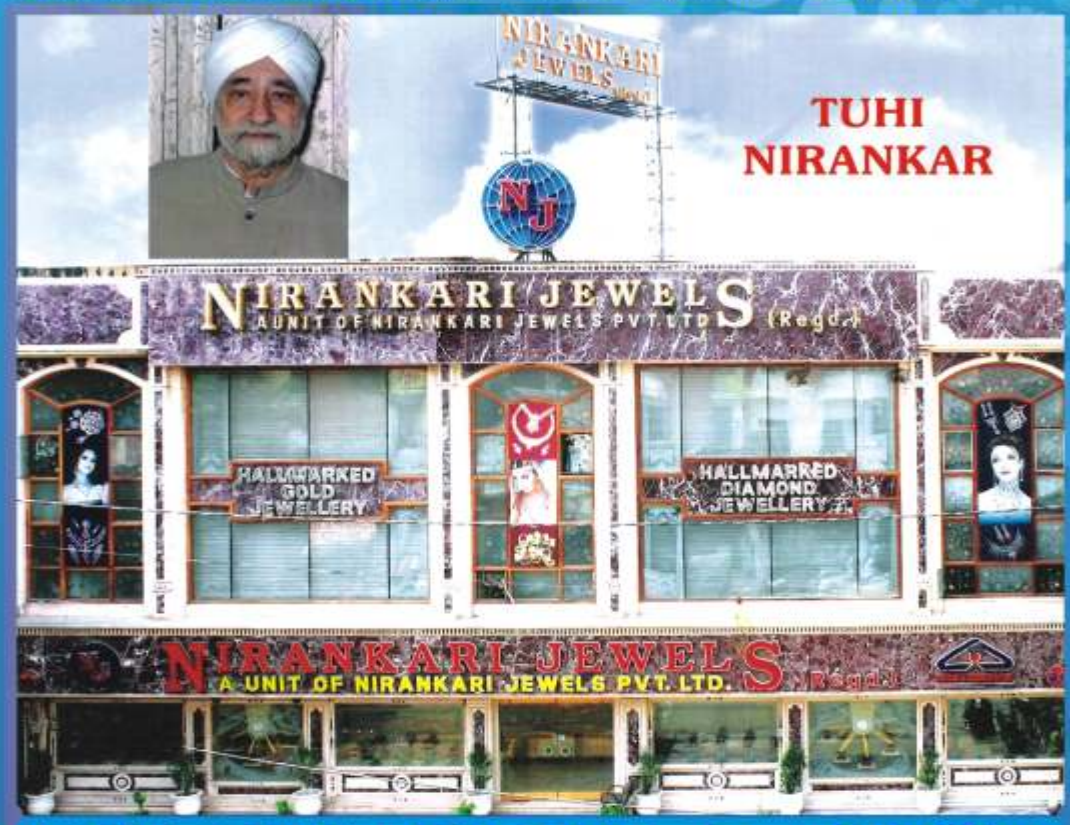

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)